Annxure-V (2)

by Geetu Dhawan

Submission date: 22-Jul-2024 12:09PM (UTC+0530)
Submission ID: 2420653090
File name: Annxure-V_2.pdf (670.4K)
Word count: 22787
Character count: 83032

एम.ए. हिंदी पूर्वार्द्ध प्रथम सेमेस्टर

MAHN- 109

पत्रकारिता प्रशिक्षण

निदेशालय, दूरस्थ शिक्षा

गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय विज्ञान और प्रौद्योगिकी

हिसार

एम.ए.हिंदी – पत्रकारिता प्रशिक्षण	
प्रथम सेमेस्टर	कोर्स कोड़ : एम.ए.एच.एन–109
समग्री संकलन एवं लेखन – डॉ. गीतू सहायक प्रो0 हिंदी	विश्लेषक –
अध्याय–1	**पत्रकारिता स्वरूप और प्रकार**

अध्याय संरचना

1.1 अधिगम उद्देश्य

1.2 परिचय

1.3 विषय वस्तु के मुख्य बिंदु

- **1.3.1 पत्रकारिता का स्वरूप**
- **1.3.2 पत्रकारिता की व्युत्पति एवं अर्थ**
- **1.3.3 पत्रकारिता की परिभाषाएं**
- **1.3.4 पत्रकारिता का दायित्व**

1.4 विषय वस्तु के आगे का प्रस्तुतीकरण

1.4.1 पत्रकारिता के प्रकार

- **1.4.1.1 विज्ञान पत्रकारिता**
- **1.4.1.2 खेल पत्रकारिता**
- **1.4.1.3 बाल पत्रकारिता**
- **1.4.1.4 ग्रामीण पत्रकारिता**
- **1.4.1.5 फिल्म पत्रकारिता**
- **1.4.1.6 रेडियो पत्रकारिता**
- **1.4.1.7 टेलीविजन पत्रकारिता**
- **1.4.1.8 फोटो पत्रकारिता**
- **1.4.1.9 आर्थिक पत्रकारिता**
- **1.4.1.10 खोजी पत्रकारिता**

1.5 प्रगति समीक्षा

1.6 सारांश

1.7 **संकेत शब्द**

1.8 **स्व मूल्यांकन हेतु प्रश्न**

1.9 **प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोतर**

1.10 **सहायक संदर्भ ग्रंथ एवं अध्ययन साम्रगीस**

1.1 अधिगम उद्देश्य

गुरु जम्भे''वर वि''वविद्यालय विज्ञान और प्रौद्योगिकी हिसार के दूरस्थ ि''ाखा निदे''ालय द्वारा संचालित पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष के पंचम प्र''न पत्र पत्रकारिता प्रशिक्षण से संबंधित पाठ्यक्रम की इकाइयों का अध्ययन करने जा रहे है। पत्रकारिता का संपूर्ण वर्गीकरण इसके अध्ययन की सुविधा के लिए आव''यक है। पत्रकारिता के क्षेत्र में जो परिवर्तन, विकास और उतार–चढाव आए, उनके कारण, स्वरूप और परिणाम का अध्ययन हम पत्रकारिता प्रशिक्षण के इतिहास के अंतर्गत करते है। पाठ्यक्रम की इस पहली इकाई में हम इसी विषय की जानकारी दे रहे है। इस इकाई को पढ़ने से आप, पत्रकारिता के महत्वपूर्ण विंदुओं से परिचित हो सकेंगे।

- पत्रकारिता लेखन की पृष्ठभूमि व इतिहास के क्षेत्र से परिचित हो सकेंगे।

1.2 परिचय

इस दि''ाा में आगे बढ़ने से पहले पत्रकारिता के क्षेत्र को समझना आव''यक है। पत्रकारिता के उद्भ्व और विकास के साथ साथ पत्रकारिता के प्रकारों का भी वर्णन किया जा रहा है।

➢ 1.3.1 पत्रकारिता का स्वरूप

सूचना और संचार क्रांति ने आज सभी मनुष्यों की जीवन शैली को परिवर्तित कर दिया है। प्रारंभ में पत्रकारिता सूचना और विचारों को पहुँचाने का साधन मात्र थी, परंतु धीरे–धीरे यह सामाजिक व्यवस्था का अंग बन गई। देश और समाज की आवश्यकताओं ने पत्रकारिता विधा

को नित्य नए स्वरूप में ढाला और परिस्थितियों ने उसे प्रभावित किया। भारतीय पत्रकारिता ने आरंभ में नवचेतना का बिगुल बजाया और इस नव चेतना से सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, साहित्यिक और दैनिक जीवन ने अंगड़ाई ली। फलस्वरूप मनुष्यों की सुप्तचेतना जागृत हो उठी और राष्ट्र को पराधीनता से छुटकारा दिलवाने में पत्रकारिता ने साहसिक कार्य कर दिखाया। डॉ. अर्जुन तिवारी पराधीन भारत की पत्रकारिता को जोखिम भरा कार्य बताते हुए लिखते हैं, षपहले पराधीन भारत की पत्रकारिता का चरित्र प्रतिरोध का था, यह जोखिम भरी थी, जो इस पर चलते वे झुकते नहीं थे भले ही टूट जाते। आजादी प्राप्ति से पहले पत्रकारिता ने भारतवासियों को नई दिशा व गति प्रदान की। देश को आजाद कराने में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने जहां अनथक प्रयास किए, वहीं पत्रकरिता के माध्यम से अपने कार्यों एवं योजनाओं को जन–जन तक पहुँचाया।

➢ 1.3.2 पत्रकारिता की व्युत्पति एवं अर्थ

जिज्ञासा प्रत्येक मनुष्य की स्वाभाविक जन्मजात मनोवृत्ति है। मानव मन में असंख्य भाव और वृत्तियां विद्यमान है। इन भावों का मानव मन में अति विशिष्ट स्थान है। मानव मन में उठने वाले इन सब भावों में जिज्ञासा भाव को प्रमुख वृत्ति के रूप में स्वीकार करते हुए, ब्रह्मसूत्र के रचयिता बादरायण ने इसे 'अथातो बहम् जिज्ञासा' कहा है। मनुष्य अपने इर्द–गिर्द घटित होने वाली घटनाओं के बारे में सदैव जानने का इच्छुक रहता है। मनुष्य की यही जानने की उत्कंठा आज के आधुनिक युग में जनसंचार के अनेक साधनों द्वारा पूरी हो जाती है। पत्रकारिता के द्वारा आज घटनाओं की संपूर्ण जानकारी श्रव्य, दृश्य अथवा श्रव्य–दृश्य माध्यमों से मनुष्यों तक पहुँचती है। पत्रकारिता प्रत्येक व्यक्ति के लिए दैनिक जीवन की एक प्रेरक पृष्ठभूमि बन गई है, जिसके अभाव में मनुष्य जीवन में रिक्तता की अनुभूति होती है। पत्रकारिता मूल रूप में समाचार व सूचनाओं के संप्रेषण पर आधारित है। अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचाना और दूसरे के विचारों को ग्रहण करना अर्थात् सूचना प्राप्त करना और सूचना प्रदान करना, मनुष्य की एक सामान्य प्रवृत्ति है। प्राचीन समय में एक स्थान से दूसरे स्थान पर भम्रण कर अपने विचारों और भावनाओं का प्रचार प्रसार करने वाले धर्म–पुरुष, अनेक प्रकार के मनोरंजक फोलों का प्रदर्शन करने वाले नट आदि मनुष्यों को जीवनोपयोगी आवश्यक

सूचनाएँ देकर उनका मार्गदर्शन करते थे। वहीं मनुष्य भी अपने व्यक्तिगत समाचारों को दूसरों तक पहुँचाने के लिए लंबे समय से कागज का प्रयोग करता आया है और आज भी यह प्रक्रिया निरंतर प्रभावी रूप से जारी है। इसे मात्र श्पत्रश कह सकते हैं। एक तरह सेश पत्रश भौगोलिक दूरी के होने पर भी आत्मीयता को प्रदर्शित करने और संदेश पहुँचाने का विश्व का सबसे बड़ा साधन है। वहीं दूसरी ओर श्पत्रश अपरिचित से परिचय करने का भी अद्वितीय साधन है। पत्र से एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का आत्मदर्शन कर लेता है और अदृश्य व्यक्ति से भी स्नेहिल संबंध बनाने में पत्र उपयोगी है। कालिदास कृत श्अभिज्ञान शाकुंतलम्श में शकुंतला पत्र के माध्यम से ही आत्माभिव्यक्ति कर पाती है। शकुंतला के सम्मुख खड़े राजा दुष्यंत के लिए लिखा गया पत्र आत्माभिव्यक्ति का कितना सहज और उचित साधन था, अन्यथा लज्जा के कारण शकुंतला अपनी पीड़ा कभी भी राजा दुष्यंत को व्यक्त नहीं कर सकती थी। अतः 'पत्र' के माध्यम से सब संभव हो गया। कालिदास लिखते हैं, ष्तव न जाने ह्रदय मम पुनः कामी दिवापि रात्रावपि, निषेण तपति बलायस्त्वयि वृतमनोरथायगांनि अर्थात् है निर्दय! मैं तेरे ह्रदय को नहीं जानती, किंतु बलवान कामदेव तुझ पर आशा लगाए हुए मेरे अंगों को दिन में भी व रात को भी तपाता रहता है।ष स्पष्ट है कि शकुंतला पत्र के द्वारा ही अपना संदेश और अपने मन के भावों को राजा दुष्यंत तक पहुँचा सकी ।

'पत्र' शब्द से व्युत्पन्न — 'पत्र' शब्द वैसे भी संस्कृत भाषा का ही शब्द है जिसकी उत्पत्ति पत्—ष्ट्रन से मानी जाती है यानि पत् धातु पर ष्ट्रन प्रत्यय लगने से पत्र शब्द बना, जिसका अर्थ है वृक्ष का पत्ता डॉ. धीरेन्द्रनाथ सिंह का मानना है, ष्पत्र शब्द में कृ धातु (करना) णिनि तल टाप प्रत्ययों के योग से पत्रकारिता शब्द बनता है। ष संस्कृत साहित्य में श्पत्रश शब्द का प्रयोग विभिन्न अर्थों में किया गया है। जिसमें से मुख्य गिरना, पड़ना, आना, उतरना, वायु में उड़ना, नीचे फेंकना आदि हैं, परंतु इन सब में श्पत्रश शब्द का अर्थ विशेषतरू गिरने के अर्थ से जोड़ा जाता है क्योंकि वृक्ष से पत्ता भी सदैव नीचे की और ही गिरता है। संस्कृत हिंदी कोशश में श्वामन शिवराम आप्टेश पत्र की व्युत्पत्ति के आधार पर यह अर्थ ग्रहण करते हैं, ष्जो गिरता होगा, जो गिरता है, नीचे आता है अर्थात् वह वृक्ष का पत्ता । ष प्राचीन समय में कागज के निर्माण से पहले वृक्षों के पत्तों पर मनुष्य अपने विचार, भाव, संदेश लिखकर अपने स्वजनों तक पहुँचाते थे। उस समय वृक्षों के पत्ते यानि भोजपत्रही संदेश भेजने का मुख्य

साधन था। इसके अतिरिक्त संस्कृत के विद्वानों ने अपने साहित्य में श्पत्रश शब्द के अनेक पर्यायों का प्रयोग किया है। पक्षियों के पंखों को भी श्पत्रश कहा गया, क्योंकि वे भी एक निश्चित समय पर गिरते हैं और कहीं पर श्वाहनश के लिए भी पत्र शब्द प्रयुक्त हुआ है, ष्स हि शुचिः शत पत्र स शुन्ध्युर्हिण्यवा सीरिधिरः स्वर्पाः।

बृहस्पति स स्वादेश ऋस्वः पुरु सखिभ्य आसुति करिष्ठः ।। अर्थात् बृहस्पति के अनेक वाहन है। ये शोधक और रमणीक बाधों से सजे है, वे गमनशील और दर्शनीय है। स्तोता को वे चाहन प्रचुर अन्न प्राप्त कराते हैं। म इस श्लोक में श्पत्रश शब्द का अर्थ बृहस्पति के वाहन के रूप में लिया गया है। इस प्रकार स्पष्ट है कि सभी विद्वानों ने श्पत्रश शब्द का अर्थ भिन्न–भिन्न रूप में लिया है। आज के समय में श्पत्रश एक स्थान से दूसरे स्थान तक भाव–विचार (संदेश) पहुँचाने का माध्यम बन गया है। इसलिए श्पत्रश शब्द का प्रयोग चिट्ठी–पत्री के लिए होता है। पत्रकारिता के संदर्भ में श्पत्रश से अभिप्राय समाचार पत्र या विचार–पत्र होता है। पत्रकारिता संदर्भ कोश में पत्र शब्द के ये अर्थ बताए गए हैं, ष समाचार पत्र, संपादक के नाम पाठकों द्वारा लिखित पत्र, पन्ना, लिखित कागज पत्र का स्वरूप आज व्यक्तिगत अर्द्धसरकारी, सरकारी आदि विविध रूपों में संभव है। इसके विपरीत जब किसी प्रदेश, देश या विदेश के विभिन्न प्रकार के समाचारों को संकलित और मुद्रित कर सर्वजन सुलभ करवाए जाते हैं, तब उसे श्समाचार पत्रश कहा जाता है। समाचार पत्र में समाचारों, लेखों और अग्रलेखन आदि का प्रकाशन किया जाता है। इसी प्रकार पत्रिकाओं का मासिक, द्विमासिक, त्रैमासिक, वार्षिक या अनियतकालीन प्रकाशन किया जाता है। इस समस्त कार्य को पत्रकारिता की संज्ञा दी जाती है।

अंग्रेजी में श्पत्रश के लिए लेटर और पत्रकारिता के लिए श्जर्नलिज्मश शब्द का प्रयोग किया जाता है। अंग्रेजी शब्द श जर्नलश से श्जर्नलिज्मश बना, जिसका सामान्य अर्थ है दैनिक अथवा प्रतिदिन के समाचारों का संकलन। श्जर्नलिज्मश की व्युत्पति फ्रेंच शब्द श्जनोंश से भी मानी जाती है, जिससे तात्पर्य है एक दिवस का कार्य डॉ. अर्जुन तिवारी ने श्एन्साइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटेनिकाश के आधार पर इसकी व्याख्या इस प्रकार की है, ष्पत्रकारिता के लिए अंग्रेजी

में जर्नलिज्मश शब्द व्यवहत होता है, जो जर्नल से निकला है। जिसका शाब्दिक अर्थ श्दैनिक श है। दिन–प्रतिदिन के क्रिया–कलापों, सरकारी बैठकों का विवरण श जर्नलश में रहता था। सत्रहवीं एवं अठारहवीं शताब्दी में श्पीरियॉडिकिलश के स्थान पर लैटिन शब्द श्डियूरनलश और श जर्नलश के प्रयोग हुए। बीसवीं सदी में गंभीर समालोचना और विद्वतापूर्ण प्रकाशन को इसके अंर्तगत माना गया। श्जर्नलश से बना श्जर्नलिज्मश अपेक्षाकृत व्यापक शब्द है। समाचार पत्रों एवं विविधिकालिक पत्रिकाओं के संपादन एवं लेखन और तत्संबंधी कार्यों को पत्रकारिता के अंतर्गत रखा गया। इस प्रकार समाचारों का संकलन, प्रसारण, विज्ञापन की कला एवं पत्र का व्यासायिक संगठन पत्रकारिता है। समसामयिक गतिविधियों के संचार से संबद्ध सभी साधन, चाहे वह रेडियो या टेलीविजन हो इसी के अंतर्गत आते हैं। इस प्रकार पत्रकारिता दैनिक जीवन की समस्त घटनाओं तथा उनके आधार पर प्रकाशित पत्रों की संवाहिका मानी जा सकती है। श्पत्रश के साथ आज एक शब्द और भी प्रचलित है जिसे हम श्पत्रिकाश कहते हैं। श्विशाल शब्द सागरश कोश में पत्रिका का अर्थ है, श्श नियत समय पर प्रकाशित होने वाला सामयिक पत्र या पुस्तक ݁ दैनिक पत्र को अपेक्षा पत्रिका के पृष्ठों की संख्या अधिक होती है। अंग्रेजी का श्वर्तलश शब्द इस पत्रिका यानि मैगजीन का घोतक है, लेकिन पत्र और पत्रिका दोनों को पत्रकारिता का ढंग प्रायरू एक ही है। वैसे कुछ पत्रकारों ने पत्रकारिता शब्द के लिए श्पत्रकारीश शब्द का भी प्रयोग किया, लेकिन श्पत्रकारिताश शब्द का प्रयोग इतना प्रचलित हुआ कि पत्रकारीश शब्द अप्रचलित सा प्रतीत होने लगा। समाचार पत्र की

दृष्टि से यदि देखा जाए तो पत्र के कर्म से संबंधित व्यक्ति पत्रकार के नाम से जाने जाते है और पत्रकार का कर्म ही पत्रकारिता है। पत्रकारीय कर्म पर प्रकाश डालते हुए दा रमेश जैन लिखते हैं, ष्यह ठीक वैसी हो स्थिति है जिसमें चित्र का बनाने वाला चित्रकार और उसका कर्म चित्रकार के रूप में आता है। पत्रकारिता वस्तुतरू बहुत समय पश्चात् पत्रकार के कर्म के अर्थ में रूढ़ हो गया। यह शब्द पत्र कार्य इता से मिलकर बना है।

इससे यह तो स्पष्ट है कि पत्रकार का कर्म पत्रकारिता कहलाया। लेकिन यदि श्पत्रश शब्द पर ही विचार किया जाए तो संस्कृत की प्रीति भारतीय हिंदी विद्वानों ने भी अपने साहित्य में श्पत्रश शब्द के अनेक पर्यायों का प्रयोग किया है। भाषा शब्द कोश में पत्र शब्द के विभिन्न

अर्थ है, ष्पत्ता, पत्ती, पर्ण, लिखा कागज, चिट्ठी अखबार एक पन्ना, पन्ना। हिंदी के प्रसिद्ध कवि गिरिजाकुमार माथुर ने अपनी श्खतश नामक कविता में पत्र को व्यक्तिगत समाचारों का संप्रेषण माना है। वे लिखते हैं, ष्खत है निजी अखबार का घर। ष प्राचीन समय में भले ही श्पत्रश केवल व्यक्तिगत संप्रेषण का ही साधन रहा हो, लेकिन पत्रकारिता जगत में श्पत्रश को सूक्ष्म अर्थ में ग्रहण न कर इसके विस्तृत अर्थ में लिया जाता है। यहां श्पत्रश कुछ शब्दों के समूह से नहीं बनता, बल्कि इसका निर्माण विस्तृत अर्थ संदर्भ में हुआ है। पत्रकारिता के अंतर्गत आने वाले इस पत्र में पृष्ठों की संख्या दो चार अथवा इससे भी अधिक हो सकती है। इसमें केवल एक विषय पर चर्चा न होकर अनेक विषय समाहित होते हैं। अतरू स्पष्ट है कि पत्रकारिता जगत का श्पत्रश साधारण पत्र की तुलना में अधिक क्षेत्रों से संबंधित, उपयोगी, प्रभावशाली और बहुग्राही होता है। आचार्य चाणक्य अपने ग्रंथ कौटिल्य अर्थशास्त्र में श्पत्रश का उल्लेख विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के संदर्भ में करते हैं। उनका मानना है कि निंदा, प्रशंसा, इच्छा, आख्यात अर्चना, प्रत्याख्यान, उपालंभ, प्रतिषेध, प्ररेणा, सांत्वना, अश्यवपत्ति, भर्त्सना तथा अनुनय इन तेरह शब्दों में पत्र से प्रकट होने वाले अर्थ निकलते हैं। विश्वसूक्ति कोश में इसका वर्णन इस प्रकार किया गया है,

षनिंदा प्रशंसा पृच्छा च तथाख्याननमाथीर्थना प्रत्याख्यानमुपालंभरू प्रतिषेथों डय चोदना सान्त्वमश्यवपत्तिश्च भर्त्सनानुनयौ तथा एतेष्वथारू प्रवर्तन्ते त्रयोदशसु लेखजा आचार्य चाणक्य की श्पत्रश संबंधी इस अवधारणा पर यदि गंभीरता से अध्ययन किया जाए तो इससे पत्र लेखन कला की सूक्ष्मता और उसकी बहुआयामी उपयोगिता स्वतरू ही उद्घाटित हो जाती है और इसी आधार पर ही पत्र लेखन कला को पत्रकारिता की संज्ञा दी जा सकती है ।

➢ 1.3.3 पत्रकारिता की परिभाषाएं

पत्रकारिता आज के आधुनिक युग की स्वतंत्र विधा है। प्रारंभिक काल से वर्तमान युग तक आते–आते पत्रकारिता ने बहुआयामी और विराट स्वरूप ग्रहण किया है। संसार का कोई भी विषय पत्रकारिता की परिधि से अछूता नहीं हैं। हालांकि पत्रकारिता का क्षेत्र इतना विस्तृत और व्यापक है कि इसे किसी भी परिभाषा में बांधना संभव नहीं है, लेकिन फिर भी पत्रकारिता

से जुड़े भारतीय तथा अभारतीय विद्वानों ने समय–समय पर इसके स्वरूप को समझा और इसकी उचित परिभाषाएं दीं।

- **जोसेफ पुल्तिजर** का मानना है–"Nothing less than the highest ideals, the most scrupulous anxity to do right, the most accurate knowledge of the problems it has to meet, and a sincere sense of social responsibility will save journalism--------'

- **विद्येमस्टीड के अनुसार**– ष्मैं समझता हूँ कि पत्रकारिता कला भी है, वृत्ति भी, जनसेवा भी। जब तक कोई यह नहीं समझता कि मेरा कर्त्तव्य अपने समाचार–पत्र द्वारा लोगों का ज्ञान बढ़ाना उनका मार्ग दर्शन करना है तब तक उसे पत्रकारिता की चाहे जितनी ट्रेनिंग दी जाये वह, पूर्ण रूप से पत्रकार नहीं बन सकता।

- **महात्मा गाँधी के अनुसार**– ष्पत्रकारिता का एक उद्देश्य जनता की इच्छाओं विचारों को समझना और उन्हें व्यक्त करना है, दूसरा उदेश्य सार्वजनिक दोषों की निर्भयतापूर्वक प्रकट करना है।

- **के. पी. नारायणन् के मतानुसार**– ष्पत्रकारिता लोकप्रिय अभिव्यक्ति की एक कला है। पत्रकारिता सभी मामलों में चर्चा के लिए जनता के सामने लोक–कल्याण कार्यों की सूची पेश करती है।ष इस कथन से स्पष्ट है कि पत्रकारिता का सम्बन्ध जीवन के किसी एक पक्ष या समाज के किसी एक वर्ग से नहीं होता है, बल्कि समस्त मानव समुदाय उसकी व्यवहार सीना में आता है। विवरण, तथ्य अवगत कराने के साथ समीक्षात्मक टिप्पणी के साथ पत्रकारिता भविष्य की दिशा भी निर्देश करती है।

- **श्री रामकृष्ण रघुनाथ खाडिलकर** ने पत्रकता और पत्रकार कलाश इन दोनों शब्दों का प्रयोग किया है। उनके अनुसार– ष्ज्ञान और विचार शब्दों तथा चित्रों के रूप में दूसरे तक पहुंचाना ही पत्रकाला है।

- **पेम्बा तथा न्यूवेन्स शब्दकोश** में पत्रकारिता को पारिभाषित करते हुए लिखा गया है– प्रकाशन, संपादन, लेखन एवं प्रसारण युक्त समाचार माध्यम का व्यवसाय पत्रकारिता है। पत्रकारिता अभिव्यक्ति की एक मनोरम कता है जिसका कार्य जनता व जन नेताओं के समझ लोकहित संबंधी कार्यों की सूची प्रस्तुत करता है।

- **सी.जी. मूजर के अनुसार**–समुचित ज्ञान का व्यवसाय ही पत्रकारिता है इसमें तथ्यों की प्राप्ति, उनका मूल्यांकन और समुचित प्रस्तुतीकरण होता है।

- **श्रीमती महादेवी वर्मा के शब्दों में**– पत्रकारिता एक रचना–शक्ति विधा है। इसके बगैर समाज को बदलना असंभव है। अतः पत्रकारों को अपने दायित्व व कर्तव्यों का निर्वाह निष्ठापूर्वक करना चाहिए क्योंकि उन्हीं के पैरों के छालों से इतिहास लिखा आए।

- **डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र के अनुसार,** पत्रकारिता यह विधा है, जिसमें पत्रकारों के कार्यों, कर्तव्यों और उद्देश्यों का विवेचन किया जाता है। जो अपने युग और अपने संबंध में लिखा जाए वही पत्रकारिता है।' (शहिन्दी पत्रकारिताश–पृष्ठ–70)

- **डॉ. हरिमोहन के शब्दों में**, पत्रकारिता नवीनतम घटनाओं की जानकारी एवं विचारों की सावधानीपूर्वक चुनकर, उनका मूल्यांकन कर, वदावश्यक उनका विश्लेषण या उनकी समीक्षा करते हुए किसी भी तरह के संचार माध्यममुद्रित दृश्य–श्रय की सहायता से जन–जन तक पहुँचाने की प्रक्रिया है।

- **डॉ. राम मोहन पाटक के अनुसार**– शपत्रकारिता सूचना का एक माध्यम है। पत्रकारिता दिन–भर की घटनाओं की सूचना उनकी आख्या और जन की जिज्ञासा तथा ज्ञान–पिपासा के समाधान का आधार है। मूल रूप में यह समाचार है।

➢ 1.3.4 पत्रकारिता का दायित्व

पत्रकारिता का दायित्व–मानव जो भी देखता, सुनता और समझता है, उसे वह अन्य व्यक्तियों के साथ बाँटना चाहता है। भाव और विचारों का आदान–प्रदान मानव की मूल प्रवृत्ति है। इसी भावाभिव्यक्ति की प्रवृति के कारण पत्रकारिता का आधिकार हुआ। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि पत्रकारिता के पीछे मनुष्य की दो विशेषताएँ कारण रूप में देखने को मिलती है––1. ज्ञान प्राप्ति की उत्कण्ठा, 2. चिन्तन और अभिव्यक्ति की जाता। पत्रकारिता निश्चित रूप से एक आन्दोलन है, एक लड़ाई है जो असहाय को सहारा, पीड़ितों को सुखज्ञानियों को ज्योति एवं मदोन्मत्त शासक की सही राह देने का दायित्व निभाती है। पत्रकारिता समाज–सेवा और विश्व बन्धुत्व की स्थापना का लक्ष्य लेकर चलती है।

पत्रकारिता का दायित्व होता है कि वह आदर्श के साथ जोड़कर यथार्थ को प्रस्तुत करे। वास्तव में पत्रकारिता एक पवित्र तथा गंभीर व्यवसाय है जिसके अपने मूल्य होते हैं। इन्हीं मूल्यों की रक्षा करने के उपलक्ष्य में पत्रकार समाज में सम्मान पाता है। पत्रकार की लेखनी श्सत्यश शिवं सुन्दरम्श के साथ बंधी रहती है। दायित्व के विभिन्न पक्ष–समाज के विस्तृत क्षेत्र में पत्रकारिता के दायित्व को निम्न पक्षों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है :

1. सत्य का उद्घाटन करना, सत्य की रक्षा करना।
2. क्षेत्रीय, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिपल होने वाले घटनाक्रम
3. सामाजिक जनमत की अभिव्यक्ति करना, जनमत का निर्माण करना।
4. समाज को घटनाओं की पूर्ण अपेक्षा श्पूर्व अनुमानश प्रदान करना।
5. जनमानस का स्वस्थ मनोरंजन करना।
6. सामाजिक कुरीतियों को मिटाने की दिशा में प्रभावी कदम उठाना।
7. समाज के सभी पक्षों–धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, राजनीतिक के सम्बन्ध में विवेचनात्मक दृष्टि देना।
8. सामान्य जनता को कर्तव्य व अधिकारों के प्रति सजग करना।

9. समय पड़ने पर व्यक्ति अथवा देश की आवाज बनना अर्थात् उनके लिए न्याय की लड़ाई लड़ना।

10. सरकारी नीतियों का विश्लेषण तथा प्रसारण ।

11. सर्व धर्म समभाव एवं सौहार्द्र–भाव को पुष्ट करना।

12. संकटकालीन परिस्थितियों में देश का मनोबल बढ़ाना।

13. श्वसुधैव कुटुम्बकम्श की भावना को प्रचारित करना। यही कारण है कि पत्रकारों को प्रतिबद्ध होकर यह दायित्व निभाना पड़ता है। यदि पत्रकार की आत्मा कमजोर पड़ती है, लेखनी चंचल होती है तो समाज विपथगामी अर्थात् दिशाघ्रमित हो जाता है, राष्ट्र और विश्व में उथल–पुथल मच जाती है।

1.4.1 पत्रकारिता के प्रकार

पत्रकारिता की तुलना मानव–जीवन से की जा सकती है। जिस प्रकार मानव जीवन अत्यंत विस्तृत है और विविध रंगों से रंगा है। ठीक उसी प्रकार पत्रकारिता का क्षेत्र भी विस्तृत व्यापक तथा बहुरंगी है। प्रत्येक व्यक्ति के कार्य और रुचि भिन्न–भिन्न होती है। कोई व्यक्ति कला में अधिक रुचि लेता है तो कोई साहित्य में। किसी की रुचि राजनीतिक कार्यों में अधिक होती है तो किसी को खेलकूद में किसी को आर्थिक मामलों में जानकारी रखना रुचिकर लगता है तो कोई राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय समाचारों में अधिक रुचि रखते हैं। यानी जीवन का जितना विस्तार दिखाई देता है, उतना ही विस्तार पत्रकारिता का भी है। आज का वर्तमान युग विशेषज्ञता का युग है। इस लिए पत्रकारिता का स्वरूप ही विशिष्टता के आधार पर बंटा हुआ है, ष्इस विभाजन को कमलापति त्रिपाठी श्प्रकारश कहते हैं, तो डॉ. हरिमोहन इसे पत्रकारिता का श्क्षेत्रश, एन. सी. पंत श्स्वरूपश कहते हैं तो डॉ. अर्जुन तिवारी इसे पत्रकारिता के विविध रूप। ष विद्वानों और आलोचकों ने जहां पत्रकारिता जगत को क्षेत्र, स्वरूप, प्रकार और विविध रूप कह कर इसे सीमाओं में बांधने का प्रयास किया, वहाँ यह कहा जा सकता है कि पत्रकारिता सब की सीमाओं से परे है क्योंकि जिन बातों को हम नहीं जानते या फिर जिन्हें जानने से हम अपने आप को असमर्थ मानते हैं, उन सबको जानने समझने की सहायता पत्रकारिता ही करती है। इसलिए यह कहना अनुचित नहीं होगा कि पत्रकारिता का क्षेत्र मानव जीवन, सृष्टि और, आकाश जितना विस्तृत और व्यापक है।

एक समय था जब पत्रकार को भी साहित्यकर की तरह जन्मजात माना जाता था। लेकिन आज पहले जैसी सोच में परिवर्तन आ चुका है। आज का युग कंप्यूटर, इंटरनेट, फैक्स, मॉडम का युग है। आज मुद्रण फोटोग्राफी और पत्रकारिता का स्वरूप परिवर्तित हो रहा है। केवल समाचार लिखना ही पत्रकारिता नहीं है, बल्कि अब तो पत्र–पत्रिकाओं के आकार–प्रकार और स्वरूप में बुनियादी तौर पर बदलाव आया है। अब साक्षात्कार परिचर्चाएं, लेख, व्यावसायिक सामग्री और विज्ञापन तो पत्रकारिता हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता का बदलता स्वरूप में उल्लेखनीय है ही, इसके साथ–साथ सृजनात्मक लेखन भी पत्रकारिता का शिष्ट अंग माना जाता है। डॉ. चंद्रकांत मेहता के अनुसार, ष्आज पत्रकारिता विकास के विविध शिखरों को पार करते हुए लोक हृदय में सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त कर चुकी है। । इसका मुख्य कारण यह है कि पत्रकारिता विज्ञान, संपादन कला तथा सा शैली का संगम स्थल है। पत्रकारिता मानव और उसके आसपास की दुनिया में लेकर अनदेखे, रोमांचक, नए से नए तथ्यों, घटनाओं और जानकारियों को अपने अंदर समेटे चलती है। आज ज्ञान–विज्ञान के अत्यधिक विस्तार के कारण प्रत्येक क्षेत्र विभिन्न उप–क्षेत्रों में बंट गया है। चिकित्सा, विज्ञान, व्यापार, शिक्षा, तकनीकी, खेल आदि प्रत्येक क्षेत्र के अपने उप–क्षेत्र बन गए हैं और पत्रकारिता भी इसका अपवाद नहीं है। जीवन की विविधता और प्रतिदिन विकसित होते नए साधनों ने पत्रकारिता को बहुआयामी बना दिया है। आज राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक सभी क्षेत्रों में पत्रकारिता ने सुविकसित आयाम स्थापित किए हैं। आज पत्रकारिता, विज्ञान, खेलकूद, फिल्म, वाणिज्य, व्यवसाय तथा ग्रामीण प्रगति के क्षेत्र में प्रवेश कर चुकी है। मानवीय क्रिया–कलापों का कोई भी पक्ष इससे अछूता नहीं है। उक्त विषयों में हम किसी भी विषय को लें, आज हमें उस क्षेत्र से संबंधित पत्र–पत्रिकाएँ सरलता से उपलब्ध हो जाएंगी। साथ ही आज का पत्रकार भी अपनी प्रवृति और रुचि के अनुसार स्वयं के लिए उचित क्षेत्रों का चुनाव कर उसमें विशेषज्ञता हासिल कर रहे हैं। पत्रकारिता के ये विविध प्रकार आधुनिक युग में विद्यमान हैं, उनमें कुछ प्रचलित प्रकारों का संक्षिप्त विवेचन इस प्रकार है।

- **1.4.1.1 विज्ञान पत्रकारिता** –

इक्कीसवीं सदी में सूचना प्रौद्योगिकी और जैव प्रौद्योगिकी ने विज्ञान पत्रकारिता के लिए नवीन मार्ग खोल दिए हैं। विज्ञान पर मनुष्य की विजय यात्रा के साथ–साथ वैज्ञानिक

उपलब्धियों को जन–जन तक पहुँचाने के लिए विज्ञान पत्रकारिता की प्रतिष्ठा हुई । जैसे–जैसे विज्ञान ने आगे कदम बढ़ाए नवीन खोज, अनुसंधान एवं नए–नए प्रयोग होते चले गए और धीरे–धीरे विज्ञान ने पत्रकारिता का आश्रय लेकर मानव जीवन पर आधिपत्य कर लिया। आज स्थिति यह है, षविज्ञान ने थल जल और वायु पर विजय प्राप्त कर ली है तथा उससे मानव जीवन का प्रत्येक क्षेत्र अत्यधिक प्रभावित है लोक रुचि के अनुरूप विज्ञान पत्रकारिता का क्षेत्र अब व्यापक हो रहा है। विज्ञान पत्रकारिता भारत की गरीबी, अस्वास्थ्य, यातायात के साधनों का अभाव, आवास की विकट समस्या से जूझ रही है। हमारे विकास से जुड़ कर यह पत्रकारिता मानव जीवन को उन्नत बनाने में साधना–रत है। ९ विज्ञान पत्रकारिता का क्षेत्र अति व्यापक है। इसी कारण विज्ञान पत्रकारिता हमारे जीवन से, सामाजिक जीवन से गहराई से जुड़ी हुई है। विज्ञान विषयक पत्रकारिता का आरंभ आज से ही नहीं, बल्कि अति प्राचीन काल से हो गया था। वैज्ञानिक तथ्यों पर लेखन की एक लंबी परंपरा हमें भारत और भारत से बाहर देशों में प्राप्त होती है, जो वैज्ञानिक पत्रकारिता के आरंभ का संकेत अवश्य देती हैय ९ ईसा पूर्व 4000 वर्ष बेबीलोन कालीन सुमेरी सभ्यता की एक चित्रलिपि अंकगणितीय सूत्रों को प्रकाशित करती है जिस को विज्ञान पत्रकारिता की सर्वप्रथम उपलब्ध सामग्री के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। प्राचीन वैज्ञानिक तथ्यों के उल्लेख यूनानी अभिलेखों (जो ईसा से 400–500 वर्ष के हैं) में भी प्राप्त होते हैं। विज्ञान–लेखन की परंपरा में ईसा पूर्व 5 वीं सदी के फारस के शाही हकीम डेमोरीडसश का नाम भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिसने यूनानी भाषा में औषध विज्ञानश पर एक पुस्तक लिखी।९ यहीं नहीं विश्व की पत्र–पत्रिकाओं में विज्ञान–लेखन वर्षों से हो रहा है, विश्व की पहली विज्ञान पत्रिकाएं श्जुर्नाल दे सेवांसश और शफिलोसोफिकल ट्रांजेक्शन्सश मानी जाती है। जो विज्ञान पत्रकारिता का आधार बनी, षविश्व की प्रथम वैज्ञानिक पत्रिका का आरंभ सन् 1665 में फ्रांस में हुआ था, जिसका श्रेय जुर्नाल दे सुवांसश को जाता है। इसके तीन माह उपरांत लंदन की रॉयल सोसाइटी के तत्कालीन सचिव हेनरी ओल्नवर्ग ने शफिलोसोफिकल ट्रांजेक्शनसश का प्रकाशन प्रारंभ किया। ये दोनों निजी पत्रिकाएँ थी। श्जुर्नाल दे सुवांस में मौलिक वैज्ञानिक शोध–निष्कर्षो के अतिरिक्त पुस्तकों की समालोचना पर भी बल दिया जाता था, जबकि शफिलोसोफिकल ट्रांजेक्शन्सश में मुख्यतरू शोध निष्कर्ष ही प्रकाशित होते थे। कुछ व्यक्ति श फिलोसोफिकल ट्रांजेक्शन्सश को ही विश्व की वैज्ञानिक पत्रिका मानते हैं। भारत की प्रथम वैज्ञानिक पत्रिका शएशियाटिक रिसचेंजश थी, जिसका प्रकाशन सन् 1788 में रॉयल ऐशियाटिक

सोसाइटी ने आरंभ किया था। कुल मिलाकर भारतीय भाषाओं की प्रथम वैज्ञानिक पत्रिका होने का श्रेय बंगला भाषा की श्पाश्वावलीश को जाता है, जिसका प्रारंभ सन् 1821 में हुआ था। इसके साथ ही देश–विदेश के सुप्रसिद्ध दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्र–पत्रिकाएँ विज्ञान समाचारों के जरिए वैज्ञानिक सामग्री का प्रकाशन करते रहे हैं। कुछ भारतीय और विदेशी पत्र–पत्रिकाओं का योगदान इस दिशा में उल्लेखनीय है। सांइस टूहे ष्न्यू सांइटिस्टश, 'नेचर', 'द मैन एंड द नेचर', 'सांइटिफिक अमेरिकन', 'सांइस डाइजेस्ट' आदि विदेशी पत्रिकाओं में देश–विदेश में हो रही वैज्ञानिक प्रगति से संबंधित सामग्री का प्रकाशन किया जाता है। वहीं शविज्ञान मासिकश (विज्ञान परिषद इलाहाबाद द्वारा 1907 में प्रकाशित), मासिक पत्रिका शविज्ञान लोकश (मेहरा एंड कंपनी आगरा) मासिक शविज्ञान प्रगतिश (वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद द्वारा 1952 में प्रकाशित) मासिक श्प्रतिरक्षा और विज्ञानश, श्आनुवंशिकीश, श्खनिज संपदा ऊर्जा तथा त्रैमासिक श्वैज्ञानिकश (भाभा अनुसंधान केंद्र से संबद्ध बंबई से 1969 में प्रकाशित), मासिक श्लोक विज्ञानश (विज्ञान समिति उदयपुर द्वारा 1960 में प्रकाशित), श्अविष्कारश (राष्ट्रीय अनुसंधान विकास निगम, दिल्ली) और शविज्ञान डाइटेस्टश (नैनीताल से 1975 में प्रकाशित) पत्रिकाएँ प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त नवभारत टाइम्स, दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, अमरउजाला, राष्ट्रीय सहारा, जनसत्ता आदि प्रमुख हिंदी पत्रों ने भी विज्ञान पत्रकारिता को विकसित करने में भारी योगदान दिया है। हिंदी के भारतेंदु काल में भी यदा–कदा विज्ञान विषयक लेख पढ़ने को मिल जाते थे। हिंदी लोक विज्ञान पत्रिकाओं में अनेक ऐसी पत्रिकाएँ हैं। जिन्होंने हिंदी में विज्ञान शिक्षण के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया, ष्गुरुकुल कांगड़ी का हिंदी में विज्ञान शिक्षण के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान है। यहां के शिक्षकों ने विज्ञान को हिंदी में सुलभ बनाने के दृष्टिकोण से रसायन, भौतिकी, वनस्पति आदि •विषयों पर पुस्तकों की रचना की। इससे वैज्ञानिकों को हिंदी भाषा में पुस्तकों के सृजन को प्रेरणा प्राप्त हुई। इसके बावजूद भी पारिभाषिक शब्दावली में एकरूपता न होने के कारण इस दिशा में कार्य करने वाले विज्ञान पत्रकारों के समक्ष बड़ी ही कठिन समस्या बनी रही। ष यह सही है कि अपनी व्यापकता के कारण विज्ञान पत्रकारिता अनेक रूपों में विकसित हुई है। आज पत्रकारिता के क्षेत्र में विज्ञान पत्रकारिता का जो नया रूप सामने आया है, वह है विज्ञान को जन–जीवन से जोड़ना। आज विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के प्रयास नहीं किए जाते क्योंकि हमारे जीवन के हर क्षेत्र में विज्ञान स्वतः ही प्रवेश

कर चुका है और मानव जीवन की आवश्यकता बन गया है। डॉ. शिवगोपाल मिश्र के अनुसार, षविज्ञान पत्रकारिता वह माध्यम है जिसके द्वारा शिक्षित प्रबुद्ध वर्ग, देश के अर्धशिक्षित, अशिक्षित, कम प्रबुद्ध जनों के लिए सूचना स्रोत उपलब्ध कराया जा सकता है।ष यद्यपि नई खोज, नई विधियाँ, अनुसंधान एवं विज्ञान कार्यक्रमों की सूचना देना विज्ञान पत्रकारिता का प्रथम कार्य है, परंतु मात्र सूचना भर देने से इस पत्रकारिता का दायित्व पूरा नहीं होता। डॉ. बलदेव राज गुप्ता अपनी पुस्तक 'Journalism By old and New Master' में लिखते हैं "Science Journalism can play an important role in promoting science by increasing the level of awareness of its readers; advising the scientists to take up specific problems of relevance and the government for support of worth while science"

विज्ञान पत्रकारिता पाठकों के जागरूक स्तर को बढ़ाकर विज्ञान के प्रचार–प्रसार में एक अहम् भूमिका निभा सकती है। साथ ही अर्थ की दृष्टि से सरकार को लाभ देती है, वहीं वैज्ञानिकों को विशेष समस्याओं के प्रति भी सचेत करती है।श विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रचार, प्रसार, प्रकाशन और लेखन को सुनियोजित करने में विज्ञान पत्रकारिता का अपना विशिष्ट महत्त्व है। वैज्ञानिक क्षेत्र में किसी अनुसंधान उपलब्धि या खोज की गहराई तक जाना, उसकी पृष्ठभूमि को समझना और उसकी संभावनाओं का संकेत देना ही वास्तव में विज्ञान पत्रकारिता है। भारत में विज्ञान विषयक पत्रकारिता को अभी विकसित करने की विशेष आवश्यकता है। भाषा शब्दावली तथा शैलीगत स्तर पर हिंदी भाषा में विज्ञान लेखन की कुछ संभावनाएँ बढ़ी हैं। आज न केवल पत्र–पत्रिकाएँ बल्कि टेलीविजन चौनल भी विज्ञान पत्रकारिता को बढ़ावा दे रहे हैं। इस दृष्टि से दूरदर्शन, नेशनल ज्योगरेफीक, डिस्कवरी चौनल विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। अतरू आज ऐसे विज्ञान लेखन की जरूरत है जिससे विज्ञान के प्रति जनता की रुचि बढ़े, वह शिक्षित बन सके और विज्ञान के व्यापक प्रभाव को अति शीघ्र समझ सके। इस प्रकार कह सकते हैं कि भले ही आज विज्ञान का क्षेत्र आर्थिक विकास से जुड़ा हो, लेकिन सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में समस्त सामाजिक वातावरण विज्ञान के चारों ओर ही घूम रहा है।

- **1.4.1.2 खेल पत्रकारिता –**

आज जिस रूप में हम खेल पत्रकारिता से परिचित हैं, वह भले ही एक नई विधा हो, परंतु खेलों से मानव जीवन का संबंध प्राचीन काल से रहा है। शब्दों और चित्रों के माध्यम से खेलों का प्रदर्शन करने और उसे पारिभाषित करने में मानव आदिकाल से ही दक्ष रहा है, षजिस दिन मनुष्य ने पहली बार पानी में मछलियों को खेलते हुए देखा होगा, उसी दिन उसके मन में अनुसरण करने की इच्छा ने जन्म लिया होगा । इसलिए आदि मानव द्वारा अंकित मछलियों के चित्र, शेर द्वारा हिरण का शिकार, या फिर मनुष्य और चीते के द्वंद्व का चित्रण संसार के प्रत्येक भाग में मिल जाता है। यद्यपि आदिमानव की खेलों की कल्पना केवल प्रकृति तथा अन्य प्राणियों पर विजय प्राप्त करने की महत्त्वकांक्षा तक ही सीमित रही। इसलिए उसके खेल अधिकतर शिकार और युद्ध से ही संबंधित रहे। लेकिन धीरे–धीरे विकसित होती सभ्यता के साथ–साथ खेल भी परिमार्जित होते गए और उनके वर्णन करने की शैली और कला भी विकसित होने लगी। महाभारत युग में खेल जीवन और शिक्षा का अभिन्न अंग थे। महाभारत में द्रोपदी स्वयंवर में भी एक रोचक खेल का वर्णन मिलता है, वहीं धृतराष्ट्र और पांडु पुत्रों के लिए रंगशालाओं में खेलों का आयोजन परस्पर प्रतियोगिता और युद्ध कौशल के प्रदर्शन की दृष्टि से किया जाता था। महाभारत में अनेक जगहों पर खेल स्थल, दर्शक एवं वातावरण का विस्तृत चित्रण मिलता है। यही नहीं, यदि पाश्चात्य साहित्य पर दृष्टि डालें तो ग्रीक कवि होमर द्वारा रचित 'इलियड भाग–23' में खेलों का वर्णन महाभारत से भी अधिक विस्तृत रूप में मिलता है । इसलिए पश्चिम में होमर को प्रथम श्खेल पत्रकारश के रूप में स्वीकार किया गया है। इसी तथ्य की पुष्टि डॉ. रमेश जैन ने इस प्रकार की है, ष्महाभारत में आचार्य द्रौण द्वारा पांडु और कंस पुत्र को खेल–खेल में दी गई शस्त्र तथा मल्ल विधाओं, रस–दौड़ आदि प्रतियोगिताओं के वर्णन को खेल पत्रकारिता का आदि रूप कहा जा सकता है । पाश्चात्य साहित्य में भी खेल समाचार के उदाहरण मिलते हैं। यूनानी लेखक होमर (850 ई. पूर्व) ने इलियड की 23 वीं पुस्तक में ओडसियस और रजाक्स के मल्ल युद्ध का वर्णन रोमांचक शैली में किया है। यूनान के ओलंपिक खेलों के आरंभ से वहां खेलों की व्यवस्थित परंपरा चली आ रही है। राम सभ्यता के उत्कर्ष से रथ और घुड़–दौड़ की प्रतियोगिता को विशेष प्रोत्साहन मिला।" कवि होमर ने स्वयं खेलों के वर्णन से पूर्व प्रत्येक खेल का गहन अध्ययन किया। ऐसा विवरण उनकी रचनाओं से मिलता है। साथ ही यह भी ज्ञात होता है कि होमर युगीन सैनिक एक अच्छे खिलाड़ी भी थे। रथ दौड़ तथा घुड़–दौड़ जैसे खेलों से जुड़ी प्रतिस्पर्धा का वर्णन, प्रतिद्वंद्वी की विजय पर आक्रोश

और क्रोध इन सब का वर्णन होमर ने बड़े रोचक तरीके से किया है। होमर युग में खिलाड़ियों की खेल प्रतिस्पर्धा के पीछे डॉ. हरबंस कुछ मनोवैज्ञानिक कारण मानते हैं। उनका कहना है, ष्होमर के युग में किसी वीर की मृत्यु के उपरान्त खेलों का आयोजन और उसमें सभी कबीलों और प्रांतों के लोगों का भाग लेना एक प्रथा थी। कदाचित इसके पीछे मनोवैज्ञानिक कारण रहे होंगे। ऐसे खेलों में भाग लेने से मृत वीर के सहयोगियों में प्रतिस्पर्धा की भावना में पैनापन तो आता ही होगा, जिससे वह न केवल पिछले दिनों की क्षति पूर्ति कर सके, बल्कि सूद सहित प्रतिशोध भी ले सके।"""

हालांकि प्रतिस्पर्धा से अलग हटकर विचार करें तो पाएंगे कि खेल स्वास्थ्य, मनोरंजन तथा खुशहाली तीनों का ही प्रतीक है। इस प्रतीक से भी बढ़कर खेल मनुष्य की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। खेल जगत के रोमांचित क्रिया–कलापों पर आधारित खेल पत्रकारिता या क्रीड़ा पत्रकारिता का आरंभ हिंदी में स्वतंत्रता के पश्चात हुआ। स्वतंत्रता से पूर्व और स्वतंत्रता के बाद खेलों के पूरे कलेवर में पर्याप्त परिवर्तन आया। पहले खेल केवल कुछ व्यक्तियों के समूहों तक ही सीमित थे। राजाओं के लिए खेल उनके मनोरंजन के लिए हुआ करते थे। आधुनिक समय में खेल का पूरा सामाजिक परिदृश्य ही बदल गया है। इसलिए आज खेल पत्रकारिता का अपना एक अलग अस्तित्व है और पत्रकारिता के एक प्रमुख प्रकार के रूप में इसकी चर्चा की जाती है. । डॉ. अनिल सिंहा और आशा सिंहा का कहना है, ष्सन् 1951 में जब दिल्ली में एशियाई खेलों का आयोजन हुआ और उसके बारे में खबरें अखबारों में आने लगीं तो लोगों का ध्यान इस ओर गया और बहुत सारे नए खेलों से आम पाठकों का परिचय हुआ। भारत एक बड़े एशियाई देश के रूप में अपने को स्थापित करने लगा था। श्री नेहरू के कारण ही एशियाई खेलों का आयोजन भारत में हुआ। लगभग सभी भाषाओं के अखबारों तथा अन्य पत्र–पत्रिकाओं में इन खेलों की खबरें प्रकाशित की जाती रहीं। ज्यादातर अंग्रेजी अखबारों ने इसे विशेष तौर पर कवर किया। इस खेल की रिपोटिंग ने खेल पत्रकारिता का आधार यहां स्थापित किया। इसकी रिपोर्टिंग में खेलों के नाम, टीमों के नाम, विजयी होने वाले खिलाड़ियों के नाम तथा खेलने के कौशल को भी थोड़ा बहुत प्रस्तुत किया गया। दरअसल भारत में खेल पत्रकारिता जैसा पत्रकारिता के क्षेत्र में कोई स्वरूप नहीं बना था। विदेशी अखबारों तथा पत्र–पत्रिकाओं में खेल का महत्त्व स्थापित हो चुका था। पश्चिम में इन अखबारों ने खेल पत्रकरिता का मार्ग व स्वरूप स्पष्ट किया, उसे प्रशस्त भी किया। इस

तरह 1960 के दशक के बाद से ही खेल पत्रकारिता का वास्तविक स्वरूप विकसित होता दिखाई देता है। यहीं से खेल पत्रकारिता का आरंभ भी माना जाता है। आरंभ में दैनिक, साप्ताहिक और मासिक समाचार–पत्रों में एक कॉलम के खेल समाचार हुआ करते थे। लेकिन इसी समय समाचार पत्रों ने अपने संस्करणों में खेलों के लिए स्वतंत्र पृष्ठों का स्थान निर्धारित कर दिया। बल्कि स्थिति यह हो गई है कि क्रिकेट, फुटबॉल, हॉकी, कबड्डी, गोल्फ, स्पर्धात्मक दौड़, बिंबिल्डन आदि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय खेलों की ओर जनता का आकर्षण बढ़ा है और कुछ प्रमुख एवं लोकप्रिय खेलों को लेकर अनेक पत्र–पत्रिकाएँ भी प्रकाशित हो रही हैं। जिनमें टाइम्स ऑफ इंडिया, दैनिक भास्कर, अमरउजाला, दैनिक जागरण, नवभारत टाइम्स, राष्ट्रीय सहारा, दैनिक हिन्दुस्तान आदि प्रमुख समाचार–पत्र और खेल पर केंद्रित पत्र–पत्रिकाएँ खेलभारती, खेलसम्राट, स्पोटर्स वीकली, क्रीड़ा जगत, क्रीड़ा लोक इत्यादि विशेष उल्लेखनीय हैं। यही नहीं टेलीविजन चौनलों में टैन स्पोटर्स, स्टारस्पोटर्स, इएसपीएन आदि चौनल भी खेल चौनल हैं और यही नहीं आकाशवाणी के माध्यम से भी समय–समय पर खेलों का सीधा प्रसारण और श्आंखों देखा हालश भी प्रस्तुत होता है, ष्टेलीविजन चौनल के सीधे प्रसारण से खेल पत्रकारिता की दुनिया ही बदल गई है अब खेल संवाददाता का कार्य केवल मैच की रिपोटिंग कर देना ही नहीं रह गया है, बल्कि अब उसे उन प्रश्नों के उत्तर भी ढूंढ़ने होते हैं, जो टी. वी. पर मैच देख रहे दर्शकों के मन में उठ रहे होते हैं। अब परिणामों की बजाय खेल के उतार–चढ़ाव का विश्लेषण देना महत्त्वपूर्ण है। इस प्रकार आज खेल की विस्तृत और बहुविध दुनिया से लोगों का सीधा संपर्क हो रहा है। साथ ही खेल साहित्य में व्यक्ति पूरी तरह रुचि लेता है, जिसका परिणाम यह है कि आज हर वर्ग का व्यक्ति खेलों की जानकारी रखने में गौरव अनुभव करता है। इसलिए विशेषज्ञों का मानना है कि खेल एक विशिष्ट विषय है। इसकी एक अलग कला है। एक अलग विज्ञान है। खेलों का भी सर्वाधिक मानवीय दृष्टिकोण होता है, खिलाड़ियों का पारस्परिक स्नेह व सौहार्द। इसलिए आज खेलों में श्रेष्ठता हासिल करना प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया है। सुरेश जोशी और सुरेश कौशिक के अनुसार, ष्खेलों में श्रेष्ठता आत्मसम्मान और गौरव का प्रतीक बन गई है। राष्ट्र प्रतिष्ठा की बात हो गई है, खेल की अंतरराष्ट्रीय स्पर्धाओं में बाजी मारना। इसलिए आज के सभ्य व सुसंस्कृत समाज में खेलों की बात हर कोई करता है। खेलों के बारे में ज्ञान रखना इज्जत की बात बन गई है। इस तरह खेल पत्रकारिता की पूरी स्थिति को देखते हुए लगता है कि आधुनिक पत्रकारिता में खेल पत्रकारिता एक महत्त्वपूर्ण प्रकार है और उसके विकास की

व्यापक संभावनाएँ अभी मौजूद हैं। इसलिए खेल पत्रकारिता को विकास के अनेक चरणों से गुजरते हुए अपने मूल्यों को ध्यान में रखते हुए अपना दायित्व पूरा करना होगा।

○ **1.4.1.3 बाल पत्रकारिता –**

वर्तमान समय में पत्रकारिता सभी क्षेत्रों में प्रवेश कर चुकी है। बाल पत्रकारिता भी उनमें से एक है। बच्चों के सम्यक विकास के लिए बाल पत्रकारिता अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। बाल साहित्य सर्जक तथा बाल पत्रकारिता से संबद्ध लोग आज बच्चों के चरित्र–निर्माण का कार्य पूर्ण कर रहे हैं क्योंकि अच्छे बाल साहित्य के सृजन से बच्चों को उचित शिक्षा देने के साथ–साथ उनका मनोरंजन भी किया जा सकता है। वैसे बाल लेखन एवं पत्रकारिता सरल कार्य नहीं है, इसे अत्यंत दुरुह माना गया है। इस बारे में प्रेमचंद गोस्वामी का कहना है, ष्बच्चों के लिए लिखना एक विशिष्ट लेखन प्रक्रिया है जिनमें लेखकीय प्रतिभा के साथ–साथ सर्जक को बाल सुलभ मन में पैठना पड़ता है। बच्चों के भाव संस्कार के अनुकूल कल्पना और मनोरंजन की सामग्री का पता लगाने के बाद ही बाल साहित्य लेखन के लिए कलम उठाई जा सकती है। बच्चों के लेखक को अपनी सीमा और शक्ति का सही प्रयोग कुछ वर्षों पीछे जाकर करना होता है।ष बाल पत्र–पत्रिकाओं ने निश्चय ही बाल साहित्य के निर्माण और उत्थान में भरपूर योगदान दिया। इन पत्र–पत्रिकाओं ने बिखरे हुए बाल साहित्य को एक जगह • एकत्रित करने का स्तुत्य प्रयास किया है। इन्हीं पत्र–पत्रिकाओं के उद्भव और विकास का इतिहास ही बाल साहित्य के इतिहास का साक्षी है। अगर यह कहा आए कि आज का बाल साहित्य इन्हीं पत्र–पत्रिकाओं की ही देन है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। भारतेंदु युग में हिंदी साहित्य की अनेक विधाओं का उदय और विकास हुआ। बाल पत्रकारिता और बाल साहित्य का प्रारंभ भी इसी युग में हुआ। इसी समय भारतेंदु हरिश्चंद ने श्बाल–दर्पणश नामक पत्र प्रकाशित किया और बाल पत्रकारिता को स्वतंत्र रूप में विकसित करने का श्रेय आज भी श्बाल दर्पणश को ही जाता है। सुरेश गौतम और वीणा गौतम के अनुसार, ष्हिंदी बाल पत्रकारिता का इतिहास कुल मिलाकर एक सौ दस वर्षों का है। बच्चों की पहली बाल पत्रिका श्बाल–दर्पणश सन् 1882 में प्रकाशित हुई थी। इसके बाद तब से लेकर आज तक लगभग डेढ़ सौ से ऊपर बाल पत्रिकाएँ प्रकाशित हो चुकी है, जिनका लेखा–जोखा अपने आप में बड़ा रोचक विषय है। यह स्पष्ट है कि बाल पत्रकारिता का

प्रादुर्भाव भारतेंदु युग में ही हो गया था परंतु उसके पश्चात द्विवेदी युग मैं प्रकाशित श्विद्यार्थीश और श्शिशुश जैसे पत्रों ने इस पत्रकारिता को पुष्पित और पल्लवित किया। इस युग में बाल साहित्य की स्थिति संतोषजनक रही। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात बाल पत्रकारिता की यात्रा निरंतर प्रगति की दिशा में बढ़ती गई। अनेक ऐसी बाल–पत्रिकाएँ उभर कर सामने आई, जिनमें से कुछ अभी भी प्रकाशित हो रही है और कुछ आर्थिक बोझ तथा अन्य संपादकीय तथा व्यवस्थापकीय कठिनाइयों के कारण अधिक समय तक न चलकर बीच में ही दम तोड़ गई। बाल–पत्रकारिता के क्षेत्र में आज अनेक पत्रिकाएँ ही नहीं अपितु अनेक समाचार पत्रों में भी बाल साहित्य को प्रोत्साहन दिया जा रहा है जिनमें से कुछ लोकप्रिय प्रमुख बाल पत्रिकाएँ हैं। 1949 में मद्रास से प्रकाशित श्चंदामामाश, श्नन्ही दुनियाश (देहरादून, 1951) श्बालजगतश (पटना .1966), श्नन्हीं कलियांश एवं श्हंसती दुनियाश (दिल्ली, 1971), 'चुन्नुमुन्नू' (पटना 1950), श्परागश (दिल्ली–बम्बई, 1953), श्नंदनश (दिल्ली, 1964), श नन्हें तारेश (चंडीगढ़ 1981), श्सुमनसौरभश (दिल्ली, 1983), श्बालमंचश (दिल्ली, 1987), श्बाल मेलाश (दिल्ली, 1989)। जहाँ तक समाचार पत्रों की बात है, लगभग सभी समाचार पत्र जैसे दैनिक जागरण, अमरउजाला, राष्ट्रीय सहारा, नवभारत टाइम्स, दैनिक भास्कर, दैनिक ट्रिब्यून आदि अपने–अपने साप्ताहिक परिशिष्टों में बाल स्तम्भ, बच्चों का कोना, बाल जगत, अंकुर, बचपन आदि नामों से बच्चों की रचनाएँ प्रकाशित करते हैं। निःसंदेह इन बाल–पत्रिकाओं ने स्वस्थ बाल साहित्य का प्रकाशन किया, वहीं इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के बढ़ते प्रभाव के कारण भी विभिन्न चौनल केवल बाल कार्यक्रम प्रस्तुत कर बच्चों का मनोरंजन तथा ज्ञानवर्धन करने के साथ–साथ उनमें लोकप्रिय हो रहे हैं। जिनमें श्कार्टून नेटवर्क, ष्जैटिक्सश श्पोगोश आदि मुख्य हैं। यही नहीं कुछ हाल ही में बनी बाल फिल्में जैसे हनुमान, कृष्णा, मकडी, सुपरमैन, जोरो, हैरी पॉर्टर, आदि इस दृष्टि से पूर्णतया सफल रही है। ये सभी पत्र–पत्रिकाएँ, फिल्में और चौनल बच्चों का साहित्य के प्रति प्रेम जगाने और उनकी रुचि को परिष्कृत करने में सहायता ही नहीं करते बल्कि समय समय पर उपयोगी जानकारियाँ भी उपलब्ध करवाकर बच्चों का मार्गदर्शन भी कर रहे हैं। इस संबंध में अर्जुन तिवारी का कहना है, ष्बालकों के सम्यक विकास के लिए बाल पत्रकारिता अत्यंत उपादेय है। बच्चों में अनंत जिज्ञासा होती है। वे दुनिया के हर विषय के हर तथ्य को जानने हेतु लालायित रहते हैं उनकी जिज्ञासा की शांति के लिए रंग –बिरंगे मनोरंजक रूप में उन्हीं की भाषा में पत्र–पत्रिकाएँ निकल रही हैं। 7

इस प्रकार बाल पत्रकारिता के अध्ययन विश्लेषण के पश्चात निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि भारतेंदु युग से लेकर आज तक की बाल पत्रकारिता में अनेक बदलाव आए, लेकिन आज भी बाल पत्रकारिता अपने को नए रूपों में प्रस्तुत कर अपने अस्तित्व को बचाए हुए है और पत्रकारिता के स्वतंत्र रूप में पहचानी जाती है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि संपूर्ण विश्व को पंचतंत्र जैसी अनोखी और अद्भुत कृति देने वाला भारत आज बाल साहित्य के क्षेत्र में किसी भी देश से पीछे नहीं है। आज भी पत्र–पत्रिकाओं में पर्याप्त मात्रा में उपयोगी बाल साहित्य का सृजन हो रहा है। वस्तुतरू बाल पत्रकारिता एक सृजनात्मक पत्रकारिता है जो इलेक्ट्रॉनिक युग में निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर हो रही है।

- **1.4.1.4 ग्रामीण पत्रकारिता** –

गाँवों पर आधारित पत्रकारिता को सामान्यतरू ग्रामीण पत्रकारिता, कृषि पत्रकारिता या आंचलिक पत्रकारिता कहा जाता है। भारत जैसे ग्रामीण जीवन वाले देश में ग्रामीण पत्रकारिता का विशेष महत्त्व है। पत्रकारिता के द्वारा हम गांवों तक राष्ट्रीय विकास का संदेश पहुँचा सकते हैं तथा वहाँ के लोगों को उनके अधिकारों एवं कर्त्तव्यों के प्रति आगरूक कर सकते हैं। इस दृष्टि से समाचार पत्र–पत्रिकाओं ने उल्लेखनीय कार्य किया है। आज राष्ट्रीय हिंदी दैनिक पत्रों में अधिक तो नहीं, परंतु कुछ हद तक ग्रामीण समाचारों और गतिविधियों का प्रकाशन होने से स्थिति में कुछ परिवर्तन अवश्य आया है। ग्रामीण पत्रकारिता की दिशा में प्रयास कर रहे समाचार–पत्र, ग्रामीण अंचल से जुड़े लोगों को स्वास्थ्य, कृषि उत्पादन संबंधी नई तकनीक, परिवार कल्याण तथा विकासात्मक गतिविधियाँ के बारे में जानकारियाँ प्रदान कर रहे हैं। भारत एक ग्रामीण प्रधान देश है। इसलिए देश की ग्रामीण जनता की समस्याओं, उनकी आशा–आकांक्षाओं को पत्रकारिता के माध्यम से प्रस्तुत करना, समाचार पत्रों का मुख्य दायित्व है। हालांकि यह स्थिति संतोषजनक नहीं है, परंतु फिर भी कुछ रूरूप में इस पर ध्यान दिया जाने लगा है। प्रो. रमेश जैन का मत है, ष्पिछले पंद्रह–बीस सालों में इस स्थिति में थोड़ा परिवर्तन हुआ। साक्षरता का प्रतिशत बढ़ा है। गांव में लोग जागरूक हुए हैं और लोकतंत्र में अखबारों की भूमिका का महत्त्व समझ रहे हैं। दूसरी तरफ समाचार पत्रों के प्रबंधकों को अपने अखबारों के प्रचार–प्रसार के लिए नए इलाके खोजना जरूरी हो गया है

क्योंकि होड़ चरम सीमा पर पहुँच रही है और व्यवसायिक दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो गया कि अखबार अधिक से अधिक हाथों में पहुंचे। ष्

इसके बावजूद भी ग्रामीण पत्रकारिता का अर्थ अस्पष्ट और भ्रामक है। गांवों में घटने वाली आपराधिक व सनसनी खेज खबरों के प्रकाशन को हो ग्रामीण पत्रकारिता कहना उचित प्रतीत नहीं होता। ग्रामीण पत्रकारिता का अर्थ एवं क्षेत्र वास्तव में अन्य क्षेत्रों की भांति विस्तृत और व्यापक है। इसके अंतर्गत ग्रामीण व जनजातीय क्षेत्रों में तीव्र गति से आ रहे परिवर्तनों से वहां से लुप्त होती पांरपरिक कलाएँ, संस्कृति खेती–बारी का मशीनीकरण बढ़ता पर्यावरणीय संकट, ग्रामीण क्षेत्रों पर पड़ने वाला पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव तथा आर्थिक क्षेत्र में बहुराष्ट्रीय कंपनियों का हस्तक्षेप अनेक विषय इस की परिधि में आते हैं। इस विषय में डॉ. अर्जुन तिवारी कहते हैं, ष्परंपरागत, लोक–कला, लोक–संस्कृति के प्रचार, कुटीर उद्योग, ग्रामीण स्वास्थ्य, हरित और श्वेत क्रांति द्वारा गाँव के समग्र विकास हेतु समर्पित पत्रकारिता को ग्रामीण पत्रकारिता कहना समीचीन है। श्ष्

कुछ लोगों का मानना है कि प्राकृतिक वातावरण, पर्यावरण तथा कृषि एवं कृषकों की समस्याओं से संबंध रखने वाली पत्रकारिता को इस श्रेणी में रखना चाहिए। वहीं अन्य लोगों का कहना है कि सरकार द्वारा ग्रामीण लोगों के हित में समय–समय पर लागू की जाने वाली योजनाएँ, राष्ट्रीय अन्तरराष्ट्रीय घटनाओं, ग्रामीण परिस्थितियों, आवश्यकताओं आदि को जनसंचार माध्यमों द्वारा अभिव्यक्त करना ही ग्रामीण पत्रकारिता है। वहीं डॉ. सविता चड्ढा इसका अर्थ केवल ग्रामीण जीवन से संबंधित सामग्री प्रकाशित करने वाले पत्रों से लेती हैं, ष्ग्रामीण पत्रकारिता का अर्थ क्या है ? गाँवों से निकलने वाले पत्र या गाँवों में पढ़े जाने वाले पत्र या फिर ग्राम्योपयोगी सामग्री से परिपूर्ण पत्र ? सम्भवतः तीनों अर्थों में ग्रामीण पत्रकारिता शब्द का प्रयोग किया जा सकता है 20 स्पष्ट है ग्रामीण आवश्यकताओं से संबद्ध समाचार, आलेख आदि ग्रामीण पत्रकारिता है। हालांकि ग्रामीण पत्र–पत्रिकाओं ने कम प्रसार संख्या के बावजूद भी छोटे से समुदाय की सभी आवश्यकताओं को पूरा किया है जो कि शहरों की बड़ी–बड़ी प्रेस के लिए संभव नहीं था। अंग्रेजी के समाचार–पत्र प्रायः ग्रामीण पत्रकारिता से उदासीन रहे हैं। फिर भी कुछ पत्र–पत्रिकाएँ ऐसी रही हैं जिन्होंने शासन और समाज का ध्यान ग्रामीण जीवन की ओर दिलाने तथा ग्रामीण चेतना जागृत करने में विशेष योगदान

दिया है, ष्ग्रामीण पत्रकारिता अपने समग्र रूप में काफी बाद सत्तर—अस्सी के दशक में हो शुरू हो पायी। लेकिन कृषि पत्रकारिता के रूप में इसकी शुरूआत काफी पहले हो गई थी। कृषि पत्रकारिता पर आधारित दुनिया का पहला ग्रामीण पत्र फ्रांस का पेरिस किसानी गजटश माना जाता है। इसकी शुरुआत 1743 ई. में हुई। भारत का पहला कृषि पत्र 1914 में कृषि सुधार तथा 1918 में श्कृषिश पहली बार आगरा से छपे 1934—35 में बंगाल में कृषि संबंधी पत्र—पत्रिकाएँ बंगला भाषा में छपीं। 1940 में अंग्रेजी में श्फार्मरश तथा श्एग्रीकल्चरष नामक पत्र निकले। इसके अलावा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के पत्र श्खेतीश, श्पशुपालनश तथा श्कृषि चयनिकाश भी काफी लोकप्रिय हुए। राज्यों में स्थिति कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा प्रकाशित पत्र जैसे श्हरियाणा खेतीश, श्हरियाणा संवादश, श्किसान भारतीश, श्आधुनिक कृषिश भी काफी उल्लेखनीय है। यहाँ नहीं आज के समय में दूरदर्शन और रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम कृषि दर्शन, श्किसान वाणीश, श्म्हारी माटीम्हारे खेतश, ष्हारे ध्लेकिन इन समाचारों की संख्या फिर भी अत्यंत कम ही होती है। डॉ. रेणुका नैयर अपनी पुस्तक श्ग्रामीण क्षेत्र की पत्रकारिताश में लिखती है, ष्वास्तव में विकास पत्रकारिता (अंग्रेजी) लंबे समय तक पश्चिमी पत्रकारिता का हिस्सा रही है। पिछले कुछ वर्षों में भारत में विकास पत्रकारिता का महत्त्व समझा जाने लगा है लेकिन ग्रामीण विकास पत्रकारिता को अभी भी वह स्थान नहीं मिला है। आज हमारे समाचार—पत्र राजनीतिक गतिविधियों की रिपोर्टिंग से ही भरे होते हैं। आज जब हम उद्योग और वाणिज्य में तेजी से अग्रसर हो रहे हैं। फिर भी हमारी रूचि इस और कम ही होती है। श्इक्नॉमिक्स टाइम्सश, श्बिजनेस स्टैंडर्डश, और श्फाईनेंशियल एक्सप्रेसश जैसे कुछ समाचार—पत्र ऐसे हैं जिनमें उद्योग और वाणिज्य की चर्चा होती है। लेकिन इसका अधिक जोर बड़ी—बड़ी कंपनियों के लेन—देन, नकी आर्थिक स्थिति और शेयरों के उतार—चढाव पर होता है। ग्रामीण विकास पत्रकारिता को बहुत कम स्थान मिल पाया। है। यह स्थान कभी—कभी दो प्रतिशत से अधिक नहीं हुआ है।ष्

इस प्रकार आज विश्व के मंच पर भारत भले ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा हो, लेकिन गाँव के विकास के बिना भारत की एक अलग पहचान बननी मुश्किल है। यह भी सत्य है कि आज तकनीकी क्षेत्र में भारत किसी भी देश से पीछे नहीं है। आज देश को बाहरी हमलों से बचाने के लिए अनेक परमाणु बम भले ही भारत ने निर्मित कर लिए हों और उसने अपनी बाहरी पहचान भी कायम कर ली हो, लेकिन आंतरिक पहचान गांव के चहुँमुखी विकास के

बिना संभव नहीं हो सकती। इसके लिए ग्रामीण पत्रकारिता से जुड़े पत्रकारों को इस दिशा में विशेष कदम बढ़ाने होंगे तथा ग्रामीण समस्याओं और परंपराओं को बारीकी से जानकर इसे विश्वपटल पर लाने के साकारात्मक प्रयास करने होंगे।

- **1.4.1.5 फिल्म पत्रकारिता –**

फिल्मों के क्षेत्र में गत वर्षों में जो प्रगति हुई है वह काफी संतोषजनक है। आज आम लोगों से लेकर खास लोगों तक सभी की पहुँच फिल्मों तक है। फिल्म एक संवेदनशील और कलात्मक विधा है। इसका भावात्मक पक्ष इतना प्रबल होता है। कि चौतन्य और जागरूक दर्शक भी उसके प्रवाह में शामिल हो जाता है। फिल्में यथार्थ जीवन की सच्चाई और दुःख–दर्द को परदे पर प्रदर्शित करती हैं, जो कहीं ने कहीं मनुष्य के जीवन के संस्कारों से संचालित होती है। हिंदी पत्रकारिता के अंतर्गत फिल्म पत्रकारिता ने अलग अस्तित्व स्थापित कर काफी लोकप्रियता हासिल की है। फिल्म पत्रकारिता से हमारा तात्पर्य उन पत्र–पत्रिकाओं तथा जम–संप्रेषण के उन साधनों से है, जिनका कार्य फिल्म संबंधी विषयों का ब्यौरा देना, फिल्म व्यवसाय से जुड़े लोगों के जीवन की जानकारी, उनके कार्यों की सूचना को पाठकों तक पहुँचाना है। डा. ठाकुरदत्त शर्मा (आलोक) कहते हैं, षफिल्में आज संचार का एक सशक्त माध्यम बन गई है। फिल्मों के दर्शक बड़ी संख्या में न केवल सिनेमा घरों में जाते हैं, न इसके अतिरिक्त घरों में भी फिल्में देखते हैं। घर पर तो संख्या दर्शकों की नहीं, अपितु फिल्में देखने की होती है। ऐसा इसलिए हो रहा है, क्योंकि फिल्म मनोरंजन का एक सशक्त माध्यम बन पाई है। इस तरह पत्रकारिता के इतिहास में फिल्म पत्रकारिता अपेक्षाकृत एक नई विधा है और यह कुछ वर्षों तक धीरे–धीरे तथा बाद में बहुत तेजी से विकसित विधा है, जिसने समाज के व्यापक हिस्से को बहुत हद तक प्रभावित किया है, ष्फोटोग्राफी के अविष्कार के साथ ही 1820 में ऑप्टिकल खिलौनों के रूप ष में सिनेमा की नींव रख दी गयी थी। सन् 1878 में एडवर्ड मुयाब्रिज ने जोट्रोप (कोल ऑफ लाईफ) द्वारा स्थिर चित्रों में गतिशीलता का प्रभाव उत्पन्न किया। इसके बाद 1890 में थामस अल्वा एडिसनश ने श्काइनेटोस्कोपश का आविष्कार कर श्मुयाब्रिजश द्वारा उत्पन्न चलचित्रीय प्रभाव उत्पन्न किया

हालांकि श्थामस अल्वा एडिसनश् के इस आविष्कार ने सिनेमा को एक सशक्त एवं प्रभावशाली माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया। फिल्म जगत की इस नई क्रांति से भारत भी पीछे नहीं रह सका, ष् 1913 में मूक फिल्म श्राजा हरिश्चंद्रश् द्वारा भारत में फिल्म निर्माण आरंभ हुआ है और 1931 में श्आलम आराश् द्वारा उसे वाणी मिली। तब से आज तक यह उद्योग लगातार प्रगति के पथ पर अग्रसर है जैसे–जैसे फिल्मों की ओर लोगों का आकर्षण बढ़ने लगा, वैसे–वैसे फिल्मी पत्रकारिता विकसित होती गई । फिल्मों की बढ़ती लोकप्रियता के कारण ऐसी पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित होने लगीं, जिनमें फिल्मों संबंधी समाचारों को स्थान दिया जाने लगा, ”हिंदी की पहली फिल्म पत्रिका कौन सी थी, इस विषय पर विद्वानों के बीच मतभेद हैं। कुछ लोग श्चित्रपटश् (दिल्ली, 1932) को और कुछ श् मंचश् (इंदौर, 1931) को यह गौरव प्रदान करते हैं। श्रंगभूमिश् (दिल्ली, 1936) अकेली प्रसिद्ध पत्रिका थी, जिसे प्रसिद्ध साहित्यकार श्ऋषभचरण जैनश् ने निकाला था । श्चित्रपटश् एक अन्य पत्रिका थी जो दिल्ली से निकाली गई थी । 1948 में श्ख्वाजा अहमद अब्बासश् ने श्सरगमश् नाम से एक बहुत ही सुंदर पत्रिका निकाली थी इनके अतिरिक्त भी समय–समय पर कई अन्य पत्रिकाएँ निकल और आज तो उनकी बाढ़ सी आ गई है।श् आरंभ में हालांकि इन पत्रिकाओं को प्राय अपेक्षाकृत कम रही हो, लेकिन धीरे–धीरे इस संख्या में आशातीत वृद्धि हुई है। आज पत्रकाओं में समाचार समीक्षा, अभिनेताओं अभिनेत्रियों मे भेटवार्ता, चपटी सामग्री, नई आने वाली फिल्मों की जानकारी आदि सामग्री बहुत अधिक मात्रा में छपी जा रही है। फिल्म पत्रकारिता के तेजी से विकसित होने के पीछे उसकी विभागत विशेषता ही है। इस संदर्भ में श्डॉ. मुश्ताक अली कुछ इस तरह अपना दृष्टिकोण रखते है, ष्हमारे जीवन में फिल्मों का कितना अहम् रोल है। इसका अंदाज न केवल बॉलीवुड में बहुतायत में बनने वाली फिल्मों से लगाया जा सकता है, वरन् दुनियाभर में उन पर मिलने वाली नायाव पुरस्कारों [5] से भी लगाया जा सकता है। हॉलीवुड के बाद दूसरे नंबर पर सबसे अधिक फिल्में बॉलीवुड की चमक–दमक, रिलीज और प्रीमियर के मौकों पर होने वाले पाँच सितारा पार्टियों [5] से भी इसका कुछ पता चलता है। सितारों की निजी जिंदगी, उनके रोमांस, उनके साक्षात्कार, उनसे जुड़ी चटपटी खबरें प्रायरू [5] हर अखबार में देखने को रोजाना मिल जाती है। आज प्रायः सभी प्रमुख समाचार–पत्र, पत्रिकाएँ फिल्म पत्रकारिता को प्रोत्साहन दे रही हैं। फिल्मी पत्रिकाओं में श्माधुरीश्, श्फिल्म फेयरश्, श्फिल्मी कलियांश्, श् फिल्म इंडियाश् का नाम गिनवाया जा सकता है। आज भी निरंतर फिल्म व्यवसाय से संबद्ध नियमित और अपटूडेट जानकारी देने वाली पत्र–पत्रिकाओं का प्रचार–प्रसार हो

रहा है। वहीं आज के पत्रकार भी केवल फिल्म पत्रकारिता से जुड़कर कार्य कर रहे हैं। समाचार–पत्र भी सप्ताह में एक दिन विशेष रूप से फिल्मी परिशिष्ट प्रकाशित कर रहे हैं। जैसे दैनिक भास्कर का (नवरंग) और राजस्थान पत्रिका का श्बॉलीवुडश परिशिष्ट यहीं नहीं इसके अतिरिक्त अनेक टेलीविजन चौनल भी नियमित रूप से फिल्मों का प्रसारण कर रहे हैं, जिनमें से जी मूवीज, जी सिनेमा, स्टॉर गोल्ड, फिल्मी आदि विशेष लोकप्रिय हैं। ये चौनल मूवी मसाला, फिल्मी गपशप, नाम से कार्यक्रम प्रस्तुत कर फिल्म जगत से जुडी जानकारियाँ तथा फिल्मों की समीक्षाएँ रोचक एवं मनोरंजक तरीके से लोगों तक पहुँचा रहे है। फिल्म पत्रकारिता के नवीन दौर पर टिप्पणी करती हुई डॉ. आशा सिन्हा लिखती हैं, ष्सत्तर के दशक के बाद जब यथार्थ सिनेमा का दौर आया, तब फिल्म पत्रकारिता में नया इतिहास रचा गया, जो एक तरह से बीस साल की फिल्म पत्रकारिता का दौर रहा है। जिसमें फिल्मों को यथार्थ जीवन तथा उसके उत्कृष्ट कला पक्ष से जोड़कर देखने का दौर आया। सामाजिक, राजनीतिक चिंताओं तथा उन पर टिप्पणियों से सिनेमा भरा हुआ है। इस ओर इंगित करने तथा भारतीय फिल्मों को दुनिया के परिप्रेक्ष्य में रखकर देखने का एक आलोचक विश्लेषणात्मक दौर फिल्म पत्रकारिता में शुरू हुआ, जो एक नया अध्याय है, पत्रकारिता के इतिहास में स्पष्ट है कि फिल्में आज एक आधुनिक कला माध्यम के में प्रमुख है।

इसका मूल उद्देश्य आरंभ से ही मनोरंजन रहा है। फिल्मों से हमारा समाज आज पूरी तरह प्रभावित है। यह एक पूर्ण कार्य है, जिसके लिए गहन अध्ययन, कलात्मक दृष्टि और अभ्यासको आवश्यकता है। यद्यपि आज फिल्म कला का क्षेत्र भी व्यवक को अपने भीतर पूरी तरह समाहित कर चुका है, लेकिन फिर भी इस क्षेत्र से जुड़े लोगों के लिए इसमें अभी भी अनेक संभावनाएँ विराजमान है।

○ **1.4.1.6 रेडियो पत्रकारिता –**

रेडियो एक ऐसा सशक्त एवं विशिष्ट संचार माध्यम है जो तुरंत संप्रेषण और विस्तृत प्रसारण की सुविधा के कारण आज पत्र–पत्रिकाओं से भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भारत में रेडियो जनसंचार का सर्वाधिक प्रमुख माध्यम इस दृष्टि से भी है, क्योंकि यह लोगों को शिक्षित तथा सूचित करने में ही नहीं, अपितु उन्हें स्वस्थ मनोरंजन उपलब्ध करवाने में

सबसे आगे है। रेडियो पत्रकारिता, मुद्रण पत्रकारिता और टेलीविजन पत्रकारिता से बिलकुल भिन्न है। यह संचार माध्यमों से अलग इसलिए भी है क्योंकि यह अत्यंत सस्ता साधन है तथा आम आदमी से इसका सीधा संबंध है। इसलिए आज जितना महत्त्व समाचार पत्र–पत्रिकाओं का है उतना हो महत्त्व रेडियो का भी है। इस दृष्टि से पाश्चात्य विचारक लेनिन का कथन है़ रेडियो बिना कागज और बिना दूरी का समाचार पत्र है। वैसे रेडियो एक ऐसा माध्यम है जो ध्वनि तरंगों के द्वारा दूर स्थित गांवों में घने पर्वतों, जंगलों, पहाड़ों और रेगिस्तानी क्षेत्रों को लांघता हुआ भी अपनी ध्वनि पहुँचाने में समर्थ है। यह एक अव्य साधन है, जो सब के द्वारा सहज आनंदपूर्वक सुना जा सकता है। यह सही है कि रेडियो, टेलीविजन और आधुनिक इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों का इतिहास संसार में तार टेलीविजन और बेतार के अविष्कार से जुड़ा हुआ है। डॉ. निशांत इस पर प्रकाश डालते हुए लिख हैं, ष्सैमुअल मार्स द्वारा टेलीग्राफ (1844), अलेक्जेंडर ग्राहम बेल द्वारा टेलीफोन (1876) और श्एडीसनश द्वारा बल्व की खोज के बाद दुनिया ने श्विद्युत युगश में प्रवेश किया। विद्युत युग ने संचार को भी अपने प्रवाह के सामान तीव्र गति देने का काम किया । सन् 1890 में गुगलेल्मों मारकोनी ने एक ऐसी विधि का अविष्कार किया जिससे ध्वनि बगैर तार के एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजी जा सकती थी। शीघ्र ही मारकोनी का बेतार का तार (वायरलेस), समुद्र में जहाज और नौकाओं में संदेश भेजने में प्रयुक्त होने लगा। इसके बाद मारकोनी वायरलेस प्रणाली में निरंतर नए नए अविष्कार जुड़ते गए। सन 1906 में ली डे फॉरेस्टश द्वारा रेडियो के लिए उपयोगी वायु–रहित–नली ट्यूब) बनाई गई, जिससे आवाज का प्रसारण संभव हो पाया। धीरे–धीरे रेडियो संचार विकसित होता गया।

स्पष्ट है कि रेडियो ध्वनि पर आधारित माध्यम है। हम जानते हैं कि सृष्टि के आरंभ में भी ध्वनियों का महत्त्व था। वेदों में भी यह स्वीकार किया गया है कि ध्वनि से ही संसार की रचना हुई और ध्वनि से ही वाणी की व्युत्पति भी मानी गई है। जब जनसंचार के आधुनिक उपकरणों का विकास नहीं हुआ था, तब मनुष्य अनेक प्रकार की ध्वनियों द्वारा आपस में संचार किया करता था। धीरे–धीरे संचार क्षमताओं में निरंतर प्रगति होती गई, जिसके परिणामस्वरूप मुद्रित कागज पर संदेश भेजा जाने लगा, लेकिन इसके लिए पढ़ा लिखा होना आवश्यक था। इसी समस्या से निपटने के लिए रेडियो का अविष्कार किया गया और आज रेडियो आधुनिक युग का सर्वाधिक शीघ्र संप्रेषित होने वाला जन–माध्यम बन गया है। रेडियों

के लिए आज श्ऑल इंडिया रेडियोश और श्आकाशवाणीश शब्द व्यवहार में लाए जाते हैं, ष्आकाशवाणी शब्द भारतवर्ष के केंद्रीय सरकार द्वारा संचालित बेतार से कार्यक्रम प्रसारित करने वाली राष्ट्रीय देशव्यापक, अखिल भारतीय संस्था के लिए व्यवहार में लाया जाता है। 8 जून 1936 में इस संस्था की स्थापना के अवसर पर इसका अंग्रेजी नामकरण श्ऑल इंडिया रेडियोश हुआ। किंतु इससे पूर्व ही सन् 1935 में तत्कालीन देशी रियासत मैसूर में एक अलग रेडियो स्टेशन की स्थापना की गई, जिसे मैसूर सरकार ने आकाशवाणीश की संज्ञा दी। भारत वर्ष के स्वतंत्र हो जाने के कुछ समय बाद जब देशी रियासतों के रेडियो स्टेशनश ऑल इंडिया रेडियोश में सम्मिलित कर लिए गए तो श्ऑल इंडिया रेडियोश के लिए भारतीय नाम श आकाशवाणीश मैसूर रेडियो के नामानुसार अपना लिया गया। इस समय अंग्रेजी में ऑल इंडिया रेडियोश और भारतीय भाषाओं में श्आकाशवाणीश शब्द का व्यवहार होता है।

रेडियो स्वयं में एक स्वतंत्र विधा है। रेडियो द्वारा समाचार, साहित्य, विज्ञान, संस्कृति आदि विषयों से संबंधित सामग्री का प्रचार–प्रसार किया जाता है। इस पत्रकारिता में समाचार वाचन, समाचार दर्शन, सामूहिक समीक्षा आदि का भी समावेश होता है। रेडियो के लिए फीचर लिखना, कहानी, कविता, नाटक आदि लिखना भी एक तरह से रेडियो पत्रकारिता के अंर्तगत लिए जा सकते हैं। दूरदर्शन के बढ़ते प्रभाव मे आज रेडियों के समक्ष भुनौती खड़ी कर दी है। रेडियो पत्रकारिता का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष श्समयश और श्संक्षिप्तताश है। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र में रेडियो पत्रकारिता का कार्य, मात्र घोषणाओं तथा वक्तव्य तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसका कार्य सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक क्षेत्र में हो रहे विकास की अर्थवत्ता को स्वर देना है। आकाशवाणी अर्थात् रेडियो ग्रामीण, अशिक्षित व अनपढ़ों के लिए प्रभावपूर्ण माध्यम है क्योंकि इसे सुनने और समझने के लिए शिक्षित होने की आवश्यकता नहीं है। यही नहीं, भारत में ही नहीं बल्कि इससे बाहरी देशों में भी रेडियो को ग्रामीण लोगों तक पहुँचने का साधन माना गया है। ष्चीन, आस्ट्रेलिया, कनाडा, इटली जैसे अनेक देशों में ग्रामीण जनता तक पहुँचने में रेडियो का पूरा फायदा उठाया गया है। देश के विशाल आकार, सड़कों की कमी, शिक्षा की कमी को देखते हुए निरूसंदेह हमारे देश में ग्रामीण जनता तक रेडियो माध्यम के द्वारा ही पहुँचा जा सकता है। मीडिया को ग्रामीण लोगों के करीब लाने की दिशा में स्थानीय श्रेडियो स्टेशनश बड़ा सार्थक प्रयास है।

रेडियो की पहुँच आज ग्रामीण लोगों तक ही नहीं बल्कि दुनिया के हर कोने में रहने वाले लोगों तक है । आज श्आकाशवाणीश के स्थानीय रेडियो स्टेशनों की भरमार है। इस श्रृंखला में एफएम स्टेशनों की एक बाढ़ आ गई है । इनमें से कुछ प्रमुख हैं, 98.3 एफ. एम रेडियो मिर्चीश, 93.5 श्रेड एफ. एमश., 91 एफ. एम. श्रेडियो सिटीश, 104 एफ. एम., श्रेडियो तरंगश, शबिग एफ. एम.श, श्रेडियो मंत्राश आदि जिन्होंने रेडियो की पूरी दुनिया ही बदल कर रख दी है। ये एफ. एम चौनल आज दिन के चौबीस घंटे मनोरंजन करने के साथ–साथ ताजा नई जानकारियाँ उपलब्ध करवाते हैं। रेडियो के ये एफ. एम. चौनल जनता में अत्यंत लोकप्रिय हो रहे हैं। यहीं रेडियो पत्रकारिता की सबसे बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है। साथ ही आज रेडियो से लाखों रुपये का कारोबार भी उन पर प्रसारित होने वाले विज्ञापनों से हो रहा है।

इस प्रकार संक्षेप में कह सकते हैं कि रेडियो पत्रकारिता का क्षेत्र आज काफी लोकप्रियता और प्रसिद्धी से परिपूर्ण है। साथ ही देश की एकता, अखंडता, सांप्रदायिक सद्भाव कायम रखने में तथा जनता को देश–प्रेम का पाठ–पठाने में रेडिये पत्रकारिता का योगदान अद्वितीय और प्रशंसनीय रहा है, लेकिन फिर भी आज ये प्रयास किए जाने आवश्यक हैं कि रेडियो पर प्रसारित किया जाने वाला हर कार्यक्रम लोगों के हितों के प्रति प्रतिबद्ध हो, जिससे राष्ट्र हित में इसकी उपयोगिता में और भी वृद्धि हो सके तथा विश्वसनीयता बढ़ सके ।

○ 1.4.1.7 टेलीविजन पत्रकारिता –

मनोरंजन मनुष्य जीवन का अति आवश्यक अंश है। सकारात्मकता की दृष्टि से वह मनुष्य के व्यक्तित्व को विकसित करने में सहायता करता है। आधुनिक जीवन में मनोरंजन के अनेक साधन विद्यमान है, जिसमें टेलीविजन सबसे प्रबल साधन है। टेलीविजन संचार माध्यमों में सबसे बड़ा माध्यम है, जिसमें दृश्य और श्रव्य दोनों विधाएँ समाहित है। विश्व के समक्ष घटने वाली घटनाओं को आज टेलीविजन स्क्रीन पर तुरंत देखा जा सकता है। इसलिए आज टेलीविजन की दुनिया का दिन–प्रतिदिन अभूतपूर्व विस्तार हो रहा है और इसकी सीमाएँ विस्तृत और व्यापक होती जा रही है।

पत्रकारिता के क्षेत्र में एक नया आयाम तब जुड़ा जब टेलीविजन का अविष्कार हुआ और टेलीविजन के अविष्कार के परिणामस्वरूप दूरदर्शन का जन्म हुआ। प्रारंभिक दौर में दूरदर्शन ही मानवीय भावनाओं और संवेदनाओं को उजागर करने वाला एक सशक्त माध्यम रहा है।

दूरदर्शन से तात्पर्य है, ष मीलों दूर बैठे किसी दृश्य, घटना या वस्तु का हूबहू दर्शन। ष संचार माध्यमों में यद्यपि सर्वप्रथम प्रेस यानि मुद्रण कला का अविष्कार हुआ, फिर रेडियो आया और फिर दूरदर्शन। इसलिए टेलीविजन पत्रकारिता में दूरदर्शन का स्थान सर्वोपरि है। वैसे हर संचार माध्यम की अपनी–अपनी कुछ सीमाएँ रही। समाचार–पत्रों की अपनी सीमाएँ हैं कि उन्हें केवल पढ़े लिखे व्यक्ति ही पढ़ सकते हैं। इसलिए समाचार पत्रों की इस कमी को रेडियो ने दूर किया क्योंकि रेडियो के प्रसारणों को सबके द्वारा सहज ही सुना जा सकता था । वहीं रेडियो केवल श्रवण संचार माध्यम था इसलिए दूरदर्शन ने रेडियो की इस कमी को शीघ्र दूर कर दिया। दूरदर्शन के अविष्कार से मानो पत्रकारिता के क्षेत्र में क्रांति आ गई और दर्शक श्रवण के साथ–साथ दृश्य की सुविधा का भी लाभ प्राप्त कर सके। टेलीविजन पत्रकारिता के विषय में डॉ. मुश्ताक अली लिखते हैं, ष्जहाँ तक टी.वी. पत्रकारिता का सवाल है तो वह समाचार–पत्रों और रेडियो दोनों से आगे की कड़ी है। जहाँ सुन भी सकते हैं, देख भी सकते हैं और अब टी. वी. स्क्रीन की पट्टी में तैरती और आती–जाती इबाबतों को भी पढ़ सकते हैं। इस तरह श्रवण के साथ दर्शन का समावेश केवल दूरदर्शन के कारण ही संभव हो पाया और इसके आविष्कार के पीछे न पाश्चात्य देशों के वैज्ञानिकों का अथक परिश्रम चिंतन–मनन और उत्कृष्ट योगदान रहा, जिन्होंने चित्रों और वाणी को एक साथ प्रदर्शित करने के लिए नवीन प्रयोग और अविष्कार किए। परिणामस्वरूप दूरदर्शन हम सबके समक्ष आया। ये सब वैज्ञानिक उन्नति का ही परिणाम था। ष्पाश्चात्य देशों में वैज्ञानिक उन्नति के साथ सर्वप्रथम 1920 में चित्र को वाणी देने का उपक्रम किया गया। डॉ. श्ब्लाडिमिट बोरिकिनश ने सन 1923 में गहन चिंतन और मनन किया। परिणामस्वरूप उन्हें सफलता मिली । सन् 1925 में अमेरिका के श्जेकिन्सनीजश्ने यांत्रिक दूरदर्शन उपकरण का प्रदर्शन किया। न्यूयार्क और वाशिंगटन के मध्य बेल टेलीफोन लेबोरेटरीज द्वारा तार के माध्यम से दूरदर्शन कार्यक्रम सन 1927 में भेजा गया। धीरे–धीरे अनेक सुधार किए गए। सन् 1937 ई. में सर्वप्रथम दूरदर्शन के नियमित कार्यक्रम को बी. बी. सी ने प्रारंभ किया। सन 1939 न्यूयॉर्क में लगे विश्व मेला में जनता ने दूरदर्शन कार्यक्रम देखा। भारत में दूरदर्शन की विकास यात्रा सन् 1964 से प्रारंभ होती है। 15 अगस्त 1965 से भारत में नियमित रूप से एक घंटे का टी. वी. कार्यक्रम प्रारंभ हुआ ।श्

यह सही है कि आरंभिक तौर पर टेलीविजन पर कार्यक्रमों की संख्या तक समयावधि अत्यंत सीमित रही, लेकिनै आधुनिक युग में प्रसारण क्षमता का इतना अधिक विकास हुआ है कि प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में न केवल विविधता है, बल्कि कार्यक्रम की अधिकता भी है। निश्चय ही आज के समय में टेलीविजन पत्रकारिता सर्वाधिक प्रभावशाली और शक्तिशाली माध्यम बन गया है। डॉ. ठाकुरदत्त शर्मा श्आलोकश की मान्यता है, ष्भारत जैसे विकासशील देश में दूरदर्शन ने विभिन्न आर्थिक स्तर के लोगों को एक ही सांस्कृतिक धरातल पर बनाए रखने में महती सफलता प्राप्त की है। एक राष्ट्रीय संस्कृति के निर्माण में दूरदर्शन ने जिस

सफलता को प्राप्त किया है, वह दूरदर्शन की महत्त्वपूर्ण एवं प्रभावी भूमिका ही है। साक्षरता, शिक्षा और स्वास्थ्य आदि के कार्यक्रमों में तो दूरदर्शन ने एक सफल प्रचारक की भूमिका का वहन किया है। दूरदर्शन को प्रसारित करने में बी.बी.सी यानि (ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कंपनी) ने उल्लेखनीय कदम उठाए। बी. बी. सी ने दूरदर्शन को प्रतिष्ठित करने में अथक प्रयास किए। फलस्वरूप आज विकसित होते नए चौनलों की पृष्ठभूमि या आधार के रूप में दूरदर्शन को देखा जा सकता है। दूरदर्शन ने ही इलैक्ट्रॉनिक पत्रकारिता को दिशा में सार्थक भूमिका निभाई। वैसे इसके बाद धीरे–धीरे विकसित होते कुछ सामान्य और विशेष चौनलों ने अवश्य ही दूरदर्शन के प्रभाव को कम कर दिया। इन नए चौनलों के विकास से ही इलैक्टॉनिक पत्रकारिता को गति और नवीन दिशा मिली। यहाँ नहीं ये चौनल आज व्यवसाय का जरिया भी बन गए हैं। तमाम चुनौतयों और समस्याओं के बावजूद भी इलैक्ट्रॉनिक पत्रकारिता यानि टेलीविजन पत्रकारिता नए आयाम छू रही है। टेलीविजन पत्रकारिता की दिशा में कुछ भारतीय तथा विदेशी चौनलों का योगदान सराहनीय है। इस संदर्भ में आशा गुप्ता का कहना है, ष्इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता की प्रभावशीलता व प्रवाहशीलता तथा इसकी सार्थकता के कारण तमाम श्विशेष चौनलोंश व श्सामान्य चौनलोंश का तेजी से विकास हो रहा है। इन चौनलों पर हिंदी व भारतीय भाषाओं में हर तरह के कार्यक्रम का प्रसारण हो रहा है क्योंकि जब श्भाषाश व्यवसाय व कमाई का जरिया बन जाती है, तो नहीं चाहते हुए भी उसका विकास करना पड़ता है। आज बखूबी देखा जा सकता है कि श अंग्रेजी के वर्धस्वश के बावजूद भूमंडलीकृत अर्थव्यवस्था की सहस्राब्दी में तमाम विदेशी चौनलों पर विज्ञापन से लेकर सांस्कृ तिक व आर्थिक, राजनीतिक आदि कार्यक्रम शहिंदीश भारतीय भाषाओं में दिखाए जा रहे हैं आज अनेक ऐसे चौनल टेलीविजन पर प्रसारित हो रहे हैं जो दिन के 24 घंटे समाचार, फिल्में, सीरियलस तथा विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम प्रस्तुत कर लोकप्रियता और प्रसिद्धी के चरम तक पहुँचे हैं। इनमें से कुछ प्रसिद्ध और मुख्य चैनलों के नाम इस प्रकार हैं–

समाचार चैनल – जी न्यूज, आजतक, एनडीटीवी, आईबीएन 7।

संगीत चैनल – एम टी.वी., जी म्यूजिक, म्यूजिक एशिया, जी. टी.वी., बी फॉर यू म्यूजिक, जूम, ई. टी.वी, द म्यूजिक मनोरंजक चौनल स्टार प्लस, जी. टी. वी., सोनी, बी.बी.सी।

खेल चैनल– इएसपीएन, टेनस्पोटर्स, स्टारस्पोटर्स फिल्मी चौनल– फिल्मी, जी सिनेमा, स्टार मूवीज, सहारा वन, स्टार गोल्ड बाल कार्यक्रम चौनल–हंगामा, पोगो, कार्टून नेटवर्क भक्ति

चौनल– साधना, जी जागरण, संस्कार, आस्था ज्ञानवर्धक चौनल डिस्कवरी, नेशनल ज्योगरेफिक।

इस प्रकार ये विभिन्न चौनल न केवल समाचार, बल्कि खेल, संगीत, भक्ति, बाल कार्यक्रम, फिल्में तथा ज्ञानवर्धक कार्यक्रम प्रस्तुत कर दर्शकों के बीच काफी लोकप्रियता हासिल कर रहे हैं। ओमकार चौधरी अपनी पुस्तक श्टेलीविजन पत्रकारिताश में लिखते हैं, ष आज समाचार पत्र–पत्रिकाएँ सूचना देने के एकमात्र माध्यम नहीं रह गए हैं। रेडियो इंटरनेट टेलीविजन भी बहुत सशक्त माध्यम होकर उभरे हैं। आज रेडियो और समाचार–पत्रों की अपेक्षा सभी लोग घटनाओं की तुरंत जानकारी प्राप्त करने के लिए संचार का सबसे तीव्र साधन टेलीविजन को देखना पसंद करते हैं। इस तरह इलैक्ट्रॉनिक मीडिया की लोकप्रियता देखकर ऐसा है इन बढ़ते चैनलों के प्रभाव कारण टेलीविजन जैसा सशक्त संचार माध्यम एक दिन दूसरे सभी संचार माध्यमों का अस्तित्व ही मिटा देगा। यही टेलीविजन पत्रकारिता का सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि होगी जो उसके उज्जवल भवि''य की ओर संकेत करती है।

- **1.4.1.8 फोटो पत्रकारिता –**

संकेतों और शब्दों की भांति चित्रों की भी अपनी एक भाषा होती किसी देते हैं। चित्रों माध्यम किसी घटना को प्रमाणित करने इतिहास अत्यंत पुराना है। आदिमानव का गुफाओं जानवरों की तरह–तरह की आकृतियां वह करता था और जिनका भोजन शिकार करता था। ये प्रारंभिक प्रमाण जहां चेतना भावना गतिविधियों के प्रतीक वहीं गुफाओं अंकित उन चित्रों को उस काल चित्रमय समाचारों देखा जा है। पत्रकारिता में चित्रों अपना महत्त्व है। पत्र–पत्रिकाओं प्रकाशित चित्रों द्वारा संदेश समाचार पाठकों से पहुँचाना फोटो पत्रकारिता है

षफोटो पत्रकारिता अंतर्गत समाचारों का दुश्यात्मक चित्रण प्रसारित किया है। फोटो पत्रकार समाचारों संबंधित चित्र एकत्रित करते हैं। चित्रों लिए उपयुक्त शीर्षक लिखने की कला फोटो पत्रकारिता के लिए महत्त्वपूर्ण विषय एक आकर्षक चित्र माध्यम प्रकाशित संक्षिप्त समाचार कई हजार शब्दों विशाल विवरण से भी अधिक प्रभावशाली और उपयोगी होता है। शीर्षक युक्त दृश्य और श्रव्य प्रकार गुणों समावेश होता है। यह उपयोगी आकर्षक विधा फोटो पत्रकारिता, पत्रकारिता का महत्त्वपूर्ण आयाम जिसमें फोटो प्रयोग के उसके स्वरूप में परिवर्तन आया है। आज समाचार पत्र–पत्रिकाओं चित्रों अधिक महत्त्व जाता है। बल्कि कहना उचित

कि वर्तमान फोटो पत्रकारिता का क्रमिक विकास हो रहा है। मुद्रण कला और यंत्रिक विकास के साथ–साथ फोटो पत्रकारिता के विकास कहानी निरंतर आगे की ओर बढ़ा रही है। आज फोटो पत्रकारिता विशेष महत्त्व टेलीविजन प्रसारण के होता जिसके द्वारा जन समुदाय के सम्मुख प्रत्येक घटना उसकी के समाचार पत्र–पत्रिकाएँ आज फोटो से भरी मिलती है जिससे अनुमान लगाया जा सकता है कि शब्दों से ज्यादा महत्व वहाँ फोटो को दिया जाता है। डॉ. गुरशरण लाल मानते है, ष्छायांकन चित्रों की भाषा है, परंतु चित्र ऐसा होना चाहिए जो प्रभावी आकर्षक और ज्ञानवर्धक ही नहीं चित्र प्रभावी होता है जो विषय वस्तु के साथ दर्शक के मानस पर अमिट प्रभाव खेड़ सके।

स्पष्ट है कि समाचारों और लेखों के साथ फोटो प्रकाशित करने का मुख्य उद्देश्य पाठकों को सूचना देना, उनका मार्गदर्शन एवं मनोरंजन करने के साथ–साथ और पत्रिकाओं को आकर्षक बनाना भी है। फोटो पत्रकारिता ने पत्रकारिता के क्षेत्र में अद्भुत क्रांति ला दी है जिससे आज लिखित सामग्री को न केवल कम शब्दों में प्रस्तुत करने की कला विकसित हुई है बल्कि कम पढ़े–लिखे लोगों की रुचि भी समाचार–पत्रों के प्रति बढ़ने लगी है। हालांकि फोटोग्राफी के अविष्कार से पूर्व रेखाचित्रों को महत्त्व दिया जाता था। लेकिन फोटोग्राफी के अविष्कार के बाद फोटो प्रकाशित करने का चलन अत्यंत लोकप्रिय हो गया। इसके लिए उन वैज्ञानिकों को श्रेय दिया जाता है जिन्होंने फोटोग्राफी के अविष्कार के लिए अनेक रासायनिक और भौतिक प्रक्रियाओं के परीक्षण किए। प्रो. रमेश जैन फोटोग्राफी की उपयोगिता बताते हुए कहते हैं, ष्फोटोग्राफी दो शब्द फोटोग्राफी के मेल से बना है। ग्रीक भाषा में श फोटोजश का अर्थ है प्रकाश और ग्राफी का अर्थ है चित्रित करना । अर्थात् प्रकाश के माध्यम से जो भी चित्रित किया जाए फोटोग्राफी कहलाता है। फोटोग्राफी कला भी है, विज्ञान भी । आधुनिक युग में मानव जीवन के विभिन्न कार्य–कलापों में फोटोग्राफी अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। कला, विज्ञान, उद्योग, चिकित्सा, शिक्षा, मनोरंजन, ज्योतिष, अतंरिक्ष, ज्ञान, अनुसंधान, जनसंपर्क, अपराध, मुद्रण आदि के साथ हो पत्रकारिता के क्षेत्र में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। फोटोग्राफी की उपयोगिता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। फोटो पत्रकार के लिए कैमरा एक नोट बुक (डायरी) है जो घटनाओं का रिकार्ड रखता है ।

फोटो पत्रकारिता और फोटोग्राफी का इतिहास बेहद पुराना है। यूरोप में सर्वप्रथम लकड़ी के ठप्पों (wood-blocks) पर नक्काशी करके समाचार–पत्रों और पत्रिकाओं में रेखाचित्र छापे जाने लगे। पत्र–पत्रिकाओं में ऐसे चित्र छपने से वह न केवल आकर्षक लगने लगे बल्कि पाठकों की संख्या भी निरंतर बढ़ने लगी। इस तरह न दिनों लकड़ी के ठप्पों के प्रयोग ने फोटो पत्रकारिता के लिए एक पृष्ठभूमि और आधार तैयार किया। जिसे आज भी कला का मौलिक नमूना माना जाता है। डॉ. निशांत सिंह इतिहास के आइने में फोटो पत्रकारिता को इस रूप में देखते हैं, षचित्रों के माध्यम से समाचारों के संप्रेषण की शुरुआत सबसे पहले 1842 में श्इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूजश ने की। इस पत्र में सबसे पहले समाचारिक मूल्य वाले चित्र छापे गए। इसके बाद समूचे विश्व में चित्र छापे जाने लगे। फिर अमेरिका की पत्रकारिता ने श्फोटो पत्रकारिताश को नये आयाम दिए। वहां अनेक सचित्र पत्र और पत्रिकाएँ प्रकाशित होना प्रारंभ हो गई। फोटो पत्रकारिता के प्रचलन के कुछ समय पूर्व ही फोटो बनने को प्रक्रिया का अविष्कार हुआ था 1839 में विलियम हेनरी फॉक्स नामक वैज्ञानिक ने फोटो बनाने की प्रक्रिया का विकास किया, जिसके द्वारा निगेटिव से पॉजिटिव बनाना सरल और सर्व मुलभ हो गया। इसके काफी समय बाद चित्रों को ज्यों का त्यों अपने के लिए श्हॉफ टोनश प्रक्रिया का विकास हुआश हॉफटोनश प्रक्रिया द्वारा चित्रों की छपाई तुरंत हो जाती थी और वह काफी सस्ती और आसान भी थी। यूं तो 1842 में फोटो पत्रकारिता की शुरुआत हो चुकी थी, लेकिन इसे वास्तविक महत्त्व प्रथम विश्व युद्ध और अमेरिका–स्पेन युद्ध के समय मिला। श्मैथ्यू ब्राडी जिमी हेपर, ष्जैसी हैमेटश और श्रॉबर्ट कापाश जैसे छायाकारों ने युद्ध के चित्र खींचकर और प्रकाशित कराकर युद्ध का सजीव वर्णन किया। यद्यपि समाचार–पत्रों और पत्रिकाओं में चित्रों और रेखाचित्रों को स्पष्टता और सुंदरता से छापने के लिए नित्य नवीन उपकरण बनते रहे, परंतु वास्तव में फोटो पत्रकारिता का विकास 1890 में भरी हुई नक्काशी के लिए विकसित उपकरणों से ही हुआ। वैसे भारत में पत्रकारिता का इतिहास गौरवपूर्ण है। आजादी से पहले पत्र–पत्रिकाएँ राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत थी। उस समय की पत्रकारिता ने न केवल स्वतंत्रता आंदोलन को बल दिया बल्कि सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। स्वाधीनता से पूर्व भारत में समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में फोटो के प्रकाशन को विशेष महत्त्व नहीं मिला। बीसवीं शताब्दी के अरिभ में ही अखबार चित्रों सहित प्रकाशित होने लगे। यह भी स्वतंत्रता के बाद संभव हो पाया। सुभाष स का मन्तव्य है, ष्सन 1947 में जब देश आजाद हुआ तो समाचार–पत्रों को अपने विकास के लिए अनुकूल वातावरण

मिला। आज भारतीय समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में समाचारों के साथ फोटो के प्रकाशन को महत्त्व दिया जाता है और उसकी तुलना विश्व के किसी भी समाचार–पत्र या पत्रिका से की जा सकती है।

अतः कहा जा सकता है कि प्रेस फोटोग्राफी वर्तमान समय में कला ही नहीं, वरन् पत्रकारिता का अभिन्न हिस्सा है। इसलिए इसे पत्रकारिता की एक विशिष्ट और स्वतंत्र विधा स्वीकार किया गया है क्योंकि अपने गुणों के अनुरूप यह एक विश्वसनीय पत्रकारिता जिसका सीधा वास्तविक वस्तुओं, घटनाओं के यथार्थ स्तर से होता है। इसमें दो महत्वपूर्ण एक फोटो और दूसरा पत्रकारिता सामान्यतः कैमरे साधारण सा कार्य है, एक पत्रकार को दृष्टि से फोटो खींचना बेहद महत्त्वपूर्ण है, साथ ही दायित्वपूर्ण भी। आज फोटो पत्रकार को संवाददाता समकक्ष माना जाता संवाददाता शब्द शिल्पी होता तो फोटो पत्रकार जीवंत चित्रों द्वारा संप्रेषित करता इसलिए किसी भी पत्रकार के लिए मौलिकता, नवीनता प्रभावशीलता के गुणों का होना अनिवार्य माना गया है। डॉ. गुरशरण लाल का यह इसी बात का करता ष्छायाकार की दक्षता पर ही है इसके लिए छायाकार वातावरण से भी परिचित होना इसके छायांकन की सफलता इस बात निर्भर है छायाकार भाव–भूमि परिचत है? इसके लिए घटना की भाव–भूमि परिचित होने आवश्यकता है। पत्रकारिता का जो स्वरूप आज उसका अतिंम रूप नहीं है, इसमें विकास रहा है। फोटोग्राफी की व्यापक क्षमताओं लोकप्रियता हुए इसे और सहज बहुआयामी बनाने अविष्कार भी आज लगातार जारी हैं।

○ 1.4.1.9 आर्थिक पत्रकारिता –

वर्तमान युग गतिविधियों के नए को उजागर किया है। इस क्रांति फलस्वरूप देश केवल औद्योगिक उत्पादन बढ़े बल्कि उसकी खपत के बाजारों का उदय है। आर्थिक और व्यापारिक गतिविधियों बढ़ावा देने जनसंचार सभी माध्यम पत्र–पत्रिकाएँ रेडियो, फिल्म, टेलीविजन के विभिन्न चौनल तथा इंटरनेट विशेष योगदान दिया इन माध्यमों से ही श्विश्वग्रामश यानि ग्लोबल विलेज संकल्पना विकसित हुई डॉ. दयानंद अपनी आर्थिक पत्रकारिता में करते ष्संचार के क्षेत्र आई क्रांति व्यापारिक सूचनाओं के आदान–प्रदान महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इससे जहाँ एक विश्व की संकल्पना विकसित हुई, वहीं दूसरी ओर श्आर्थिक गांव बने विश्वश का

सम्प्रत्यय भी भर कर आया। यह सही है कि आज 21 वीं शताब्दी में दुनिया श्ग्लोबल विपेजश (गाँव) में परिवर्तित होती दिखाई देती है। आज पूरा विश्व कम्यूनिकेशन माध्यमों से जुड़ा हुआ है। सूचना विस्फोट को स्थिति उत्पन्न करने वाले इन संचार माध्यमों के द्वारा हमें पलभर में विश्व की आर्थिक और व्यापारिक सूचनाएँ उपलब्ध हो जाती हैं। ये सभी सूचनाएँ अर्थ से संबंधित होती है। यहां यह भी स्पष्ट करना आवश्यक है कि बिना अर्थ यानि धन के जीवन के किसी भी क्षेत्र में कार्य करना संभव नहीं है। इसलिए अर्थ से संबंधित क्रिया कलापों को उजागर करने के लिए आर्थिक पत्रकारिता महत्त्वपूर्ण है। डॉ. मुश्ताक अली के अनुसार, ष्अर्थ का हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। बिना अर्थ के जिदंगी एक कदम भी आगे नहीं चल पाती, लेकिन आम आदमी यह नहीं जान पाता कि रुपया कहाँ से आता है, कहाँ जाता है, मुद्रा क्यों लुढकती है, क्यों चढ़ती है ? रुपये के मुकाबले डॉलर कितना महंगा और सस्ता हुआ ? पट्रोल की कीमतें अंतरराष्ट्रीय बाजार के उतार–चढ़ाव से कैसे चढ़ती उतरती है ? किस उत्पाद के शेयर मुंह के बल गिरे हैं ? किनकी खरीद से फायदा या नुकसान है ? किस कंपनी के कौन से उत्पाद नए आए हैं, किस कंपनी ने अपनी कारों के दामों में कमी की है ? गेहूँ के दाम क्यों उछले हैं, तिलहन क्यों मद्दा पड़ा है ? सरकार के अस्थिर होने पर शेयर बाजार में अफरा–तफरी क्यों मच जाती है ? ऐसे अनेक विषयों की चर्चा प्रायः सभी अखबारों में रोजाना होती है। ऐसे विषयों से संबंध रखने वाली पत्रकारिता आर्थिक पत्रकारिता है।

जनसंचार के सभी माध्यमों ने आम आदमी को आर्थिक और व्यापारिक सूचनाएँ प्रदान करने के साथ ही विश्व के विभिन्न देशों के आपसी संबंधों को प्रभावित करने वाले आर्थिक और व्यापारिक पहलुओं को पर्याप्त महत्त्व दिया है, क्योंकि बिन सूचनाओं के आदान–प्रदान के राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय व्यापार की कल्पना ही नहीं की जा सकती। इसलिए दुनिया के सभी देशों के आपसी संबंध भी इन्हीं आर्थिक और व्यापारिक संबंधों पर ही निर्भर करते रहे हैं। इससे यह भी संकेत मिलता है कि आर्थिक पत्रकारिता का इतिहास भी अत्यंत प्राचीन है। इसका सीधा संबंध औद्योगिक क्रांति से रहा है। सन् 1600 से 1750 के बीच श्ईस्ट इंडिया कंपनीश सहित ब्रिटिश कंपनियों ने अंग्रेजों को अथाह धन संपति का मालिक बना दिया। इसके बाद ही संपूर्ण विश्व में व्यापारिक गतिविधियाँ तेजी पकड़ती गई, ष्भारत में आर्थिक पत्रकारिता का इतिहास उतना ही पुराना है जितना पत्रकारिता का इतिहास। भारत का पहला समाचार–पत्र 29 जनवरी 1780 को कलकता से प्रकाशित हुआ जिसका नाम

शबंगाल गजट अफ कैलकटा जेनरल एडवरटाइजर था। इस पत्र को श्जेम्स आगस्टश्ने था इसलिए लोग शहिक्की गजटश के नाम से अधिक जानते थे। वस्तुतरू इस समाभार पत्र में व्यापारिक सूचनाएँ और विज्ञापन आदि अधिक प्रकाशित हो श्व्यापारिक पत्रश सिद्ध करते हैं। स्वयं हिक्की ने इस समाचार पत्र के प्रकाशन के करे में दिए गए वक्तव्य में यह स्वीकार किया था कि यह पत्र एक व्यापारिक और राजनीतिक समाचार पत्र है जो सबके लिए खुला है, परंतु किसी से प्रभावित नहीं है। स्पष्ट है कि प्रारंभिक दौर में आर्थिक और व्यापारिक सूचनाओं की जो प्रमुखता दी जाती रही है, उसका सिलसिला आज भी जारी है । अर्थ प्रधान आधुनिक युग में व्यावसासिक और आर्थिक समाचारों के प्रति पाठकों की अभिरुचि बढ़ती जा रही है। आज आर्थिक पत्रकारिता इतनी विकसित हुई है कि अर्थतंत्र पर आधारित अनेक पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित होने लगी हैं। इसमें दैनिक, मासिक, साप्ताहिक सभी शामिल हैं। इनमें अधिकांश अंग्रेजी भाषा की पत्र–पत्रिकाएँ हैं, जिनमें शबिजनेस वर्ल्डश शबिजनेस टुडेश शबिजनेस इंडियाश, शविजर्डश, श्मनीश, श्मनीटेनश, श्प्रॉफिटश, शबिजनेस स्टैंडर्डश, आदि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त टाइम्स ऑफ इंडिया समूह द्वारा प्रकाशित इकोनॉमिक टाइम्सश एक्सप्रेस समूह द्वारा प्रकाशित श्फाईनेंशियल एक्सप्रेसश अमरउजाला समूह द्वारा प्रकाशित श्कारोबारश से विशेष रूप से आर्थिक पत्रकारिता के क्षेत्र में एक नया मोड़ आया। यहीं नहीं अनेक टेलीविजन चौनल भी प्रतिदिन शबिजनेस अपडेटश प्रसारित करते हैं तथा बिजनेस न्यूज चौनलों ने भी इस दिशा में आशातीत सफलता हासिल की है। डॉ. नवीन चंद्र पंत आर्थिक पत्रकारिता के प्रारंभ को कोई आकस्मिक घटना नहीं मानते । उनका कहना है, ष्मुख्यतयारू भारत में आर्थिक पत्रकारिता का आरंभ 1961 में हुआ, पर यह कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। वास्तव में यहाँ तो आजादी मिलने से पूर्व भी बाजार में अनेक पत्रिकाएँ विद्यमान थीं, जो आर्थिक गतिविधि और व्यापार संबंधी सूचनाएँ पाठकों तक पहुँचाती थी । इन सब में कॉमर्सश महत्त्वपूर्ण पत्रिका थी । श्कामर्सश बम्बई से प्रकाशित होती थी । इसमें उद्योगों के विकास और उसकी समस्याओं का विवरण तथा विश्लेषण प्रस्तुत किया जाता था।' अब तो स्थिति यह है कि आर्थिक गतिविधियों के प्रत्येक क्षेत्र में इतना शोध, चिंतन–मनन और अनुशीलन हुआ है कि वह अपने आप में एक स्वतंत्र विषय बन गया है। मीडिया के विभिन्न माध्यमों में आर्थिक समाचारों को स्थान मिलने लगा है। इस कैलकटा जेनरल ,डवरटाइजर था। इस प= को श्जेम्स आ•स्टश्ने था इसलि, लो• शहिक्की •जटश के नाम से अधिक जानते थे। वस्तुतरू इस समाभार प= में व्यापारिक सूचनाँ, और विज्ञापन आदि अधिक प्रकाशित हो

श्व्यापारिक प=श सि) करते हैं। स्वयं हिक्की ने इस समाचार प= के प्रकाशन के करे में दि, •, वक्तव्य में यह स्वीकार किया था कि यह प= ,क व्यापारिक और राजनीतिक समाचार प= है जो सबके लि, खुला है, परंतु किसी से प्रभावित नहीं है।

स्पष्ट है कि प्रारंभिक दौर में आर्थिक और व्यापारिक सूचनाओं की जो प्रमुखता दी जाती रही है, उसका सिलसिला आज भी जारी है । अर्थ प्रधान आधुनिक यु• में व्यावसासिक और आर्थिक समाचारों के प्रति पाठकों की अभिरुचि बढ़ती जा रही है। आज आर्थिक प=कारिता इतनी विकसित हुई है कि अर्थतं= पर आधारित अनेक प=–प=िकाँ, प्रकाशित होने ल•ी हैं। इसमें दैनिक, मासिक, साप्ताहिक सभी शामिल हैं। इनमें अधिकांश अं•जी भाषा की प=–प=िकाँ, हैं, जिनमें शबिजनेस वर्ल्डश शबिजनेस टुडेश शबिजनेस इंडियाश, शविजर्डश, श्मनीश, श्मनीटेनश, श्प्रॉफिटश, शबिजनेस स्टैंडर्डश, आदि प्रमुख हैं । इसके अतिरिक्त टाइम्स ऑफ इंडिया समूह }ारा प्रकाशित इकोनॉमिक टाइम्सश ,क्सप्रेस समूह }ारा प्रकाशित श्फाईनेंशियल ,क्सप्रेसश अमरउजाला समूह }ारा प्रकाशित श्कारोबारश से विशेष रूप से आर्थिक प=कारिता के {ी= में ,क नया मोड़ आया। यहीं नहीं अनेक टेलीविजन चौनल भी प्रतिदिन शबिजनेस अपडेटश प्रसारित करते हैं तथा बिजनेस न्यूज चौनलों ने भी इस दिशा में आशातीत सफलता हासिल की है ।

डॉ. नवीन चंद्र पंत आर्थिक पत्रकारिता के प्रारंभ को कोई आकस्मिक ?ाटना नहीं मानते । उनका कहना है, ''मुख्यतयाः भारत में आर्थिक पत्रकारिता का आरंभ 1961 में हुआ, पर यह कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। वास्तव में यहाँ तो आजादी मिलने से पूर्व भी बाजार में अनेक पत्रिकाएँ, विद्यमान थीं, जो आर्थिक गतिविधि और व्यापार संबंधी सूचनाएँ, पाठकों तक पहुँचाती थी । इन सब में 'कॉमर्स' महत्त्वपूर्ण पत्रिका थी। 'कॉमर्स' बम्बई से प्रकाशित होतही थी। इसमें उद्योगों के विकास और उसकी समस्याओं का विवरण तथा विश्लेषण प्रस्तुत किया जाता था।" अब तो स्थिति यह है कि आर्थिक गतिविधियों के प्रत्येक क्षेत्र में इतना शोध, चिंतन–मनन और अनुशीलन हुआ है कि वह अपने आप में एक स्वतंत्र विषय बन गया है। मीडिया के विभिन्न माध्यमों में आर्थिक समाचारों को स्थान मिलने लगा है। इस पत्रकारिता के कारण ही अनेक विकसित और विकासशील देशों को प्रगति में व्यावहारिक सहयोग प्राप्त हुआ है। इसी कारण पत्र–पत्रिकाओं में छपने वाले व्यापारिक समाचारों को किसी भी देश

की आर्थिक गतिविधियों का दर्पण माना सकता है। संक्षेप में कह सकते हैं कि वर्तमान अर्थ प्रधान इस युग में आर्थिक पत्रकारिता का अपना विशेष स्थान है। आज लोगों में आर्थिक विकास के प्रति जागरूकता बढ़ी है। दूसरे समाचारों की तरह लोग आर्थिक समाचार–पत्र पत्रिकाओं में भी रुचि रखते हैं। इस दृष्टि से देश विदेश के व्यापारिक केंद्रो एवं संगठनों के विकास तथा आर्थिक जगत की नवीनतम जानकारी की दिशा में इसकी उपयोगिता सदैव बनी रहेगी।

- **1.4.1.10 खोजी पत्रकारिता –**

विकास के इस युग में पत्रकारिता जिस नए आयाम को लेकर उभरी है, वह है खोजी पत्रकारिता । खोजी पत्रकारिता का अर्थ है छिपी हुई सूचनाओं और तथ्यों पर प्रकाश डालना । खोजी पत्रकारिता आधुनिक पत्रकारिता का महत्त्वपूर्ण अंग बन गई है। यह एक जोखिम भरा एवं चुनौतीपूर्ण पत्रकारिता है जिसमें अतिरिक्त सजगता और सचेतता को आवश्यकता रहती है। खोजी पत्रकारिता की परिभाषा देते हुए डॉ. हरिमोहन एवं हरिशंकर जोशी कहते हैं, ष्खोजी पत्रकारिता अन्वेषणात्मक रिपोटिंग (प्दअमेजपहंजपअम तमचवतजपदह) का पर्याय है। इसकी सीमा में दुनिया का कोई भी ऐसा प्रकरण, घटना अथवा समाचार आ सकता है, जो अपने वास्तविक रूप में पाठकों या दर्शकों की दृष्टि से ओझल हो और जिसमें कई रहस्य छिपे हुए हों ।""

वैसे खोजी पत्रकारिता को अन्वेषणात्मक, इंवेस्टीगेटिव, जासूसी, अनुसंधानात्मक पत्रकारिता भी कहा जाता है। इस पत्रकारिता से जुड़े पत्रकार को जासूस की तरह कार्य करते हुए गुप्त एवं रहस्यमय समाचारों की खोज के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी पड़ती है.ष अंग्रेजी भाषा का इंवेस्टीगेट (प्दअमेजपहंजम) लैटिन भाषा के श वेस्टीजीयमश से आया है। । जिसका तात्पर्य हैश पदचिन्हश। खोज संबंधी संवाददाता सूचना की तह तक जाता है उसके पदचिन्हों पर चलते हुए संवाददाता एक शिकारी की तरह अपने शिकार को खोज में लगा रहता है।ष खोजी पत्रकारिता का उद्देश्य केवल जानकारी देना ही नहीं बल्कि ऐसी विशेष जानकारी प्रदान करता है जो गोपनीयता की परतों को हटाकर रख दे यानि इस पत्रकारिता में गुप्त घटनाओं, तथ्यों आदि की सूचना के साथ–साथ विश्लेषण भी प्रस्तुत किया जाता है। कुछ घटनाएँ ऐसी होती है जो किन्ही कारणवश जनता के समक्ष नहीं आ पाती। साथ ही घटना

से जुड़े आपराधिक लोग भी तथ्यों को छिपाने का प्रयास करते हैं। ऐसी ही गुप्त घटनाओं व सूचनाओं को काफी खोजबीन के पश्चात अनावृत करना खोजी पत्रकारिता ही कहलाती है। डॉ. अर्जुन तिवारी के अनुसार, ष्पत्रकारिता जासूसी और का सशक्त साधन है। वाशिंगटन पोस्ट के दो संवाददाताश वर्नसटाइनश और श्सुडवर्डश ने अपनी प्रतिभा तथा तत्परता के बल पर गुप्तचर का युगान्तरकारी कार्य किया। फलतरू श्वॉटरगेट कांडश से सत्ता परिवर्तन हुआ।ष

खोजी पत्रकारिता के दायरे में आज दुनिया का कोई भी प्रकरण, कोई भी ऐसी घटना या समाचार अछूता नहीं है जो वास्तविक रूप में जनता की दृष्टि में ना आ सके। यह किसी सजग, सचेत, साहसी और सत्यनिष्ठ पत्रकार द्वारा पूरी छानबीन करने के उपरांत गोपनीय सूचनाएँ एकत्रित करके किसी प्रकरण को जनता के समक्ष पूरी सच्चाई के साथ लाने का जोखिम भरा कार्य है। यह एक प्रकार का सामाजिक बुराइयों पर किया जाने वाला आक्रमण है जो पत्रकार द्वारा सत्य और मानवता की रक्षा हेतु किया जाता है। प्रो. रमेश जैन खोजी पत्रकारिता को तहलका मचाने वाली पत्रकारिता मानते हैं, उनके अनुसार, ष्भारतीय पत्रकारिता में भी ऐसे कई उदाहरण है, जब खोजपूर्ण खबरों के कारण तहलका मचा और कई राजनेताओं को कुर्सी छोड़नी पड़ी। वर्ष 1988–89 में बोफोर्स तोप की खरीद में रिश्वत खाए जाने का मामला भी खोजपूर्ण रपटी का विषय बना। श्तहलका कांडश ने बंगारू लक्ष्मण को अपने पद से त्यागपत्र देने को विवश किया। मधुमिता हत्याकांड, कारगिल युद्ध के दौरान ताबूत खरीद प्रकरण, बेस्ट बेकरी मामला ताज कॉरिडोर, स्टांप पेपर घोटाला, रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान से बाघों का गायब होना आदि समाचार खोजपूर्ण समाचार बने।

वैसे देखा जाए तो खोजी पत्रकारिता न कोई सरल कार्य है और न ही किसी घटना की मात्र रिपोर्टिंग है। इसमें घटनाओं का विश्लेषण तार्किक ढंग से किया जाता है । यह ताकि विश्लेषण ठोस साक्ष्यों तथ्यों, साक्षात्कारों आदि पर आधारित होता है । श्री एस. के अग्रवाल का मंतव्य है, ष्दअमेजपहंजपअम श्रवनतदंसपेउ पे जीम तमचवतजपदह व ि बवदबमंसमक पदवितउंजपवद. श्खोजी पत्रकारिता गुप्त सूचनाओं की रिपोटिंग है।श अनुसंधान या खोजी पत्रकारिता का आज विदेशों में ही नहीं बल्कि भारत में भी विशेष महत्व है। पत्रकारिता के व्यावसायिकरण एवं पारस्परिक प्रतिस्पर्द्धा के कारण खोजी पत्रकारिता को बढ़ावा मिलता है। आज सभी प्रमुख समाचार–पत्र और चौनल सनसनी समाचारों को प्रकाशित कर पाठको की

अभिरुचि में वृद्धि कर रहे हैं। इसलिए आज पत्रों की लोकप्रियता के प्रमाण में खोजी पत्रकारिता का अहम रोल है ष्भारत में खोजी पत्रकारिता का प्रारंभ कब हुआ ? निश्चित रूप से इसको सही तिथि नहीं आता जा सकती है। यहाँ खोजी पत्रकारिता का आरंभिक स्रोत बंगाल से दिखाई देता है सर्वप्रथम बंगला समाचार पत्र श्जुगान्तरश का प्रकाशन हुआ। इस पत्र में प्रति बुधवार को एक कॉलम खोजी पत्रकारिता के अंतर्गत भावों को व्यक्त किया जाता था। इसके समय उपरांत श्री आर. के. करंजिया के संपादकत्व में हिंदी में श्ब्लिट्जश नामक एक साप्ताहिक समाचार–पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इसके अतिरिक्त आज अनेक प्रमुख पत्र–पत्रिकाएँ जैसे दैनिक जागरण, राष्ट्रीय सहारा टाइम्स ऑफ इंडिया, दैनिक भास्कर, अमरउजाला, जनसत्ता, दैनिक ट्रिब्यून, पंजाब केसरी, दैनिक हिन्दुस्तान जैसे पत्र, इंडिया टूडे जैसी (पत्रिका) खोजपरक समाचारों को विशेष महत्त्व और स्थान देते हैं। पिछले कुछ दशकों में इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के बढ़ते प्रभाव से खोजी पत्रकारिता को नई दिशा मिली है। इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों जैसे रेडियो, टेलीविजन, तथा इंटरनेट ने भी खोजी पत्रकारिता को गति प्रदान की है। उपरोक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि पत्रकारिता का उद्देश्य सत्य की रोशनी में सच्चाई को उद्घाटित करना होता है। इसलिए खोजी पत्रकारिता पूर्वाग्रहों से अलग होकर, तथ्यों का तलस्पर्शी विश्लेषण करने वाली होनी चाहिए। डॉ. लक्ष्मीकांत पांडेय का मानना है, ष्खोजी पत्रकारिता का जनरुचि से गहरा संबंध है। इसलिए खोजी पत्रकार को अपने दायित्व के प्रति सजग रहना चाहिए। उनकी एक–एक पंक्ति देश में चिनगारी के रूप में कार्य करती है। यही कारण है कि खोजी पत्रकार को निष्पक्ष, तटस्थ रहकर विवेक का पूर्ण उपयोग करते हुए उसे सही दिशा में आगे बढ़ना चाहिए।श

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि खोजो पत्रकारिता का उद्देश्य सच्चाई की विवेचना करना है। इसकी परिधि अत्यंत व्यापक है। इसके द्वारा एक ओर जनता के –समक्ष सत्य का उद्घाटन किया जा सकता है। वहीं अपराधियों के खिलाफ साक्ष्य जुटाकर समाज को उचित रूप से सेवा भी की जा सकती है। यद्यपि भारत में खोजी पत्रकारिता की ये प्रारंभिक अवस्था है, लेकिन अपने विकास के प्रारंभिक दौर में खोजी पत्रकारिता ने पाठकों के हृदय में महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया है।

1.5 प्रगति समीक्षा –

अभी तक इस अध्याय में विद्यार्थी जिन विषयों का अवलोकन कर पाए है उसकी प्रगति समीक्षा का समय है। विद्यार्थी इन प्रश्नों का अध्ययन करने के पश्चात स्वयं उत्तर लिखने का प्रयास करें। पत्रकारिता का क्षेत्र क्या है। आज के समय में पत्रकारिता क्या प्रभाव रखती है। इसकी समीक्षा अपने शब्दों में तैयार करें।

प्रश्न : पत्रकारिता के प्रकारों में प्रमुख तीन प्रकारों का वर्णन करें।

प्रश्न : पत्रकारिता का उद्‌भव और विकास बताएं।

प्रश्न : पत्रकारिता की प्रमुख परिभाषाओं का वर्णन करें।

1.6 सारांश –

पत्रकारिता निश्चित रूप से एक आन्दोलन है, एक लड़ाई है जो असहाय को सहारा, पीड़ितों को सुखज्ञानियों को ज्योति एवं मदोन्मत्त शासक की सही राह देने का दायित्व निभाती है। पत्रकारिता समाज–सेवा और विश्व बन्धुत्व की स्थापना का लक्ष्य लेकर चलती है। पत्रकारिता का दायित्व होता है कि वह आदर्श के साथ जोड़कर यथार्थ को प्रस्तुत करे। वास्तव में पत्रकारिता एक पवित्र तथा गंभीर व्यवसाय है जिसके अपने मूल्य होते हैं। इन्हीं मूल्यों की रक्षा करने के उपलक्ष्य में पत्रकार समाज में सम्मान पाता है।

1.7 संकेत शब्द – पत्रकारिता, प्रिंट मीडिया, पत्रकार, मीडिया, समाचार पत्र ।

1.8 स्वः मूल्यांकन हेतु प्रश्न –

प्रश्न : पत्रकारिता की परिभाषा बताएं।

प्रश्न : फोटो पत्रकारिता पर टिप्पणी लिखे।

प्रश्न : खोजी पत्रकारिता किसे कहते है।

प्रश्न : पत्रकारिता का विकास कैसे हुआ।

प्रश्न : पत्रकारिता का क्या दायित्व होता है।

1.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोतर –

प्रश्न : पत्रकारिता के प्रकारों में प्रमुख तीन प्रकारों का वर्णन करें।

उतर : ग्रामीण पत्रकारिता – गाँवों पर आधारित पत्रकारिता को सामान्यतरू ग्रामीण पत्रकारिता, कृषि पत्रकारिता या आंचलिक पत्रकारिता कहा जाता है। भारत जैसे ग्रामीण जीवन वाले देश में ग्रामीण पत्रकारिता का विशेष महत्त्व है। पत्रकारिता के द्वारा हम गांवों तक राष्ट्रीय विकास का संदेश पहुँचा सकते हैं तथा वहाँ के लोगों को उनके अधिकारों एवं कर्त्तव्यों के प्रति आगरूक कर सकते हैं। इस दृष्टि से समाचार पत्र–पत्रिकाओं ने उल्लेखनीय कार्य किया है। आज राष्ट्रीय हिंदी दैनिक पत्रों में अधिक तो नहीं, परंतु कुछ हद तक ग्रामीण समाचारों और गतिविधियों का प्रकाशन होने से स्थिति में कुछ परिवर्तन अवश्य आया है। ग्रामीण पत्रकारिता की दिशा में प्रयास कर रहे समाचार–पत्र, ग्रामीण अंचल से जुड़े लोगों को स्वास्थ्य, कृषि उत्पादन संबंधी नई तकनीक, परिवार कल्याण तथा विकासात्मक गतिविधियाँ के बारे में जानकारियाँ प्रदान कर रहे हैं। भारत एक ग्रामीण प्रधान देश है। इसलिए देश की ग्रामीण जनता की समस्याओं, उनकी आशा–आकांक्षाओं को पत्रकारिता के माध्यम से प्रस्तुत करना, समाचार पत्रों का मुख्य दायित्व है। हालांकि यह स्थिति संतोषजनक नहीं है, परंतु फिर भी कुछ रूरूप में इस पर ध्यान दिया जाने लगा है। प्रो. रमेश जैन का मत है, ष्पिछले पंद्रह–बीस सालों में इस स्थिति में थोड़ा परिवर्तन हुआ। साक्षरता का प्रतिशत बढ़ा है। गांव में लोग जागरूक हुए हैं और लोकतंत्र में अखबारों की भूमिका का महत्त्व समझ रहे हैं। दूसरी तरफ समाचार पत्रों के प्रबंधकों को अपने अखबारों के प्रचार–प्रसार के लिए नए इलाके खोजना जरूरी हो गया है क्योंकि होड़ चरम सीमा पर पहुँच रही है और व्यवसायिक दृ ष्टिकोण से यह आवश्यक हो गया कि अखबार अधिक से अधिक हाथों में पहुंचे।

इसके बावजूद भी ग्रामीण पत्रकारिता का अर्थ अस्पष्ट और भ्रामक है। गांवों में घटने वाली आपराधिक व सनसनी खेज खबरों के प्रकाशन को हो ग्रामीण पत्रकारिता कहना उचित प्रतीत नहीं होता। ग्रामीण पत्रकारिता का अर्थ एवं क्षेत्र वास्तव में अन्य क्षेत्रों की भांति विस्तृत और व्यापक है। इसके अंतर्गत ग्रामीण व जनजातीय क्षेत्रों में तीव्र गति से आ रहे परिवर्तनों से वहां से लुप्त होती पांरपरिक कलाएँ, संस्कृति खेती–बारी का मशीनीकरण बढ़ता पर्यावरणीय

संकट, ग्रामीण क्षेत्रों पर पड़ने वाला पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव तथा आर्थिक क्षेत्र में बहुराष्ट्रीय कंपनियों का हस्तक्षेप अनेक विषय इस की परिधि में आते हैं। इस विषय में डॉ. अर्जुन तिवारी कहते हैं, ष्परंपरागत, लोक–कला, लोक–संस्कृति के प्रचार, कुटीर उद्योग, ग्रामीण स्वास्थ्य, हरित और श्वेत क्रांति द्वारा गाँव के समग्र विकास हेतु समर्पित पत्रकारिता को ग्रामीण पत्रकारिता कहना समीचीन है।

कुछ लोगों का मानना है कि प्राकृतिक वातावरण, पर्यावरण तथा कृषि एवं कृषकों की समस्याओं से संबंध रखने वाली पत्रकारिता को इस श्रेणी में रखना चाहिए। वहीं अन्य लोगों का कहना है कि सरकार द्वारा ग्रामीण लोगों के हित में समय–समय पर लागू की जाने वाली योजनाएँ, राष्ट्रीय अन्तरराष्ट्रीय घटनाओं, ग्रामीण परिस्थितियों, आवश्यकताओं आदि को जनसंचार माध्यमों द्वारा अभिव्यक्त करना ही ग्रामीण पत्रकारिता है। वहीं डॉ. सविता चड्ढा इसका अर्थ केवल ग्रामीण जीवन से संबंधित सामग्री प्रकाशित करने वाले पत्रों से लेती हैं, ष्ग्रामीण पत्रकारिता का अर्थ क्या है ? गाँवों से निकलने वाले पत्र या गाँवों में पढ़े जाने वाले पत्र या फिर ग्राम्योपयोगी सामग्री से परिपूर्ण पत्र ? सम्भवतः तीनों अर्थों में ग्रामीण पत्रकारिता शब्द का प्रयोग किया जा सकता है 20 स्पष्ट है ग्रामीण आवश्यकताओं से संबद्ध समाचार, आलेख आदि ग्रामीण पत्रकारिता है। हालांकि ग्रामीण पत्र–पत्रिकाओं ने कम प्रसार संख्या के बावजूद भी छोटे से समुदाय की सभी आवश्यकताओं को पूरा किया है जो कि शहरों की बड़ी–बड़ी प्रेस के लिए संभव नहीं था। अंग्रेजी के समाचार–पत्र प्रायः ग्रामीण पत्रकारिता से उदासीन रहे हैं। फिर भी कुछ पत्र–पत्रिकाएँ ऐसी रही हैं जिन्होंने शासन और समाज का ध्यान ग्रामीण जीवन की ओर दिलाने तथा ग्रामीण चेतना जागृत करने में विशेष योगदान दिया है, ष्ग्रामीण पत्रकारिता अपने समग्र रूप में काफी बाद सत्तर–अस्सी के दशक में हो शुरू हो पायी। लेकिन कृषि पत्रकारिता के रूप में इसकी शुरूआत काफी पहले हो गई थी। कृषि पत्रकारिता पर आधारित दुनिया का पहला ग्रामीण पत्र फ्रांस का पेरिस किसानी गजटश माना जाता है। इसकी शुरूआत 1743 ई. में हुई। भारत का पहला कृषि पत्र 1914 में कृषि सुधार तथा 1918 में श्कृषिश पहली बार आगरा से छपे 1934–35 में बंगाल में कृषि संबंधी पत्र–पत्रिकाएँ बंगला भाषा में छपीं। 1940 में अंग्रेजी में श्फार्मरश तथा श्एग्रीकल्चरष नामक पत्र निकले। इसके अलावा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के पत्र श्खेतीश, श्पशुपालनश तथा श्कृषि चयनिकाश भी काफी लोकप्रिय हुए। राज्यों में स्थिति कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा प्रकाशित

पत्र जैसे श्हरियाणा खेतीश, श्हरियाणा संवादश, श्किसान भारतीश, श्आधुनिक कृषिश भी काफी उल्लेखनीय है। यहाँ नहीं आज के समय में दूरदर्शन और रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम कृषि दर्शन, श्किसान वाणीश, श्म्हारी माटीम्हारे खेतश, ष्म्हारे ध्लेकिन इन समाचारों की संख्या फिर भी अत्यंत कम ही होती है। डॉ. रेणुका नैयर अपनी पुस्तक श्ग्रामीण क्षेत्र की पत्रकारिताश में लिखती है, ष्वास्तव में विकास पत्रकारिता (अंग्रेजी) लंबे समय तक पश्चिमी पत्रकारिता का हिस्सा रही है। पिछले कुछ वर्षों में भारत में विकास पत्रकारिता का महत्त्व समझा जाने लगा है लेकिन ग्रामीण विकास पत्रकारिता को अभी भी वह स्थान नहीं मिला है। आज हमारे समाचार–पत्र राजनीतिक गतिविधियों की रिपोर्टिंग से ही भरे होते हैं। आज जब हम उद्योग और वाणिज्य में तेजी से अग्रसर हो रहे हैं। फिर भी हमारी रूचि इस और कम ही होती है। श्इक्नॉमिक्स टाइम्सश, श्बिजनेस स्टैंडर्डश, और श्फाईनेंशियल एक्सप्रेसश जैसे कुछ समाचार–पत्र ऐसे हैं जिनमें उद्योग और वाणिज्य की चर्चा होती है। लेकिन इसका अधिक जोर बड़ी–बड़ी कंपनियों के लेन–देन, नकी आर्थिक स्थिति और शेयरों के उतार–चढाव पर होता है। ग्रामीण विकास पत्रकारिता को बहुत कम स्थान मिल पाया। है। यह स्थान कभी–कभी दो प्रतिशत से अधिक नहीं हुआ है।ष्

इस प्रकार आज विश्व के मंच पर भारत भले ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा हो, लेकिन गाँव के विकास के बिना भारत की एक अलग पहचान बननी मुश्किल है। यह भी सत्य है कि आज तकनीकी क्षेत्र में भारत किसी भी देश से पीछे नहीं है। आज देश को बाहरी हमलों से बचाने के लिए अनेक परमाणु बम भले ही भारत ने निर्मित कर लिए हों और उसने अपनी बाहरी पहचान भी कायम कर ली हो, लेकिन आंतरिक पहचान गांव के चहुँमुखी विकास के बिना संभव नहीं हो सकती। इसके लिए ग्रामीण पत्रकारिता से जुड़े पत्रकारों को इस दिशा में विशेष कदम बढ़ाने होंगे तथा ग्रामीण समस्याओं और परंपराओं को बारीकी से जानकर इसे विश्वपटल पर लाने के साकारात्मक प्रयास करने होंगे।

फिल्म पत्रकारिता –

फिल्मों के क्षेत्र में गत वर्षों में जो प्रगति हुई है वह काफी संतोषजनक है। आज आम लोगों से लेकर खास लोगों तक सभी की पहुँच फिल्मों तक है। फिल्म एक संवेदनशील और कलात्मक विधा है। इसका भावात्मक पक्ष इतना प्रबल होता है। कि चौतन्य और जागरूक

दर्शक भी उसके प्रवाह में शामिल हो जाता है। फिल्में यथार्थ जीवन की सच्चाई और दुःख–दर्द को परदे पर प्रदर्शित करती हैं, जो कहीं ने कहीं मनुष्य के जीवन के संस्कारों से संचालित होती है। हिंदी पत्रकारिता के अंतर्गत फिल्म पत्रकारिता ने अलग अस्तित्व स्थापित कर काफी लोकप्रियता हासिल की है। फिल्म पत्रकारिता से हमारा तात्पर्य उन पत्र–पत्रिकाओं तथा जम–संप्रेषण के उन साधनों से है, जिनका कार्य फिल्म संबंधी विषयों का ब्यौरा देना, फिल्म व्यवसाय से जुड़े लोगों के जीवन की जानकारी, उनके कार्यों की सूचना को पाठकों तक पहुँचाना है। डा. ठाकुरदत्त शर्मा (आलोक) कहते हैं, षफिल्में आज संचार का एक सशक्त माध्यम बन गई है। फिल्मों के दर्शक बड़ी संख्या में न केवल सिनेमा घरों में जाते हैं, न इसके अतिरिक्त घरों में भी फिल्में देखते हैं। घर पर तो संख्या दर्शकों की नहीं, अपितु फिल्में देखने की होती है। ऐसा इसलिए हो रहा है, क्योंकि फिल्म मनोरंजन का एक सशक्त माध्यम बन पाई है। इस तरह पत्रकारिता के इतिहास में फिल्म पत्रकारिता अपेक्षाकृत एक नई विधा है और यह कुछ वर्षों तक धीरे–धीरे तथा बाद में बहुत तेजी से विकसित विधा है, जिसने समाज के व्यापक हिस्से को बहुत हद तक प्रभावित किया है, ष्फोटोग्राफी के अविष्कार के साथ ही 1820 में ऑप्टिकल खिलौनों के रूप ९ में सिनेमा की नींव रख दी गयी थी। सन् 1878 में एडवर्ड मुयाब्रिज ने जोट्रोप (कोल ऑफ लाईफ) द्वारा स्थिर चित्रों में गतिशीलता का प्रभाव उत्पन्न किया। इसके बाद 1890 में थामस अल्वा एडिसनश ने श्काइनेटोस्कोपश का आविष्कार कर श्मुयाब्रिजश द्वारा उत्पन्न चलचित्रीय प्रभाव उत्पन्न किया

हालांकि श्थामस अल्वा एडिसनश के इस आविष्कार ने सिनेमा को एक सशक्त एवं प्रभावशाली माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया। फिल्म जगत की इस नई क्रांति से भारत भी पीछे नहीं रह सका, ९ 1913 में मूक फिल्म श्राजा हरिश्चंद्रश द्वारा भारत में फिल्म निर्माण आरंभ हुआ है और 1931 में श्आलम आराश द्वारा उसे वाणी मिली। तब से आज तक यह उद्योग लगातार प्रगति के पथ पर अग्रसर है जैसे–जैसे फिल्मों की ओर लोगों का आकर्षण बढ़ने लगा, वैसे–वैसे फिल्मी पत्रकारिता विकसित होती गई । फिल्मों की बढ़ती लोकप्रियता के कारण ऐसी पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित होने लगीं, जिनमें फिल्मों संबंधी समाचारों को स्थान दिया जाने लगा, "हिंदी की पहली फिल्म पत्रिका कौन सी थी, इस विषय पर विद्वानों के बीच मतभेद हैं। कुछ लोग शचित्रपटश (दिल्ली, 1932) को और कुछ श मंचश (इंदौर, 1931) को यह गौरव प्रदान करते हैं। श्रंगभूमिश (दिल्ली, 1936) अकेली प्रसिद्ध पत्रिका थी, जिसे प्रसिद्ध साहित्यकार

श्ऋषभचरण जैनश ने निकाला था । शचित्रपटश एक अन्य पत्रिका थी जो दिल्ली से निकाली गई थी । 1948 में श्ख्वाजा अहमद अब्बासश ने शसरगमश नाम से एक बहुत ही सुंदर पत्रिका निकाली थी इनके अतिरिक्त भी समय–समय पर कई अन्य पत्रिकाएँ निकल और आज तो उनकी बाढ़ सी आ गई है।श्श आरंभ में हालांकि इन पत्रिकाओं को प्राय अपेक्षाकृत कम रही हो, लेकिन धीरे–धीरे इस संख्या में आशातीत वृद्धि हुई है। आज पत्रकाओं में समाचार समीक्षा, अभिनेताओं अभिनेत्रियों मे भेटवार्ता, चपटी सामग्री, नई आने वाली फिल्मों की जानकारी आदि सामग्री बहुत अधिक मात्रा में छपी जा रही है। फिल्म पत्रकारिता के तेजी से विकसित होने के पीछे उसकी विभागत विशेषता ही है। इस संदर्भ में श्डॉ. मुश्ताक अली कुछ इस तरह अपना दृष्टिकोण रखते है, ष्हमारे जीवन में फिल्मों का कितना अहम् रोल है। इसका अंदाज न केवल बॉलीवुड में बहुतायत में बनने वाली फिल्मों से लगाया जा सकता है, वरन् दुनियाभर में उन पर मिलने वाली नायाव पुरस्कारों से भी लगाया जा सकता है। हॉलीवुड के बाद दूसरे नंबर पर सबसे अधिक फिल्में बॉलीवुड की चमक–दमक, रिलीज और प्रीमियर के मौकों पर होने वाले पाँच सितारा पार्टियों से भी इसका कुछ पता चलता है। सितारों की निजी जिंदगी, उनके रोमांस, उनके साक्षात्कार, उनसे जुड़ी चटपटी खबरें प्रायरू हर अखबार में देखने को रोजाना मिल जाती है। आज प्रायः सभी प्रमुख समाचार–पत्र, पत्रिकाएँ फिल्म पत्रकारिता को प्रोत्साहन दे रही हैं। फिल्मी पत्रिकाओं में श्माधुरीश, शफिल्म फेयरश, शफिल्मी कलियांश, श फिल्म इंडियाश का नाम गिनवाया जा सकता है। आज भी निरंतर फिल्म व्यवसाय से संबद्ध नियमित और अपटूडेट जानकारी देने वाली पत्र–पत्रिकाओं का प्रचार–प्रसार हो रहा है। वहीं आज के पत्रकार भी केवल फिल्म पत्रकारिता से जुड़कर कार्य कर रहे हैं। समाचार–पत्र भी सप्ताह में एक दिन विशेष रूप से फिल्मी परिशिष्ट प्रकाशित कर रहे हैं। जैसे दैनिक भास्कर का (नवरंग) और राजस्थान पत्रिका का श्बॉलीवुडश परिशिष्ट यहीं नहीं इसके अतिरिक्त अनेक टेलीविजन चौनल भी नियमित रूप से फिल्मों का प्रसारण कर रहे हैं, जिनमें से जी मूवीज, जी सिनेमा, स्टॅार गोल्ड, फिल्मी आदि विशेष लोकप्रिय हैं। ये चौनल मूवी मसाला, फिल्मी गपशप, नाम से कार्यक्रम प्रस्तुत कर फिल्म जगत से जुडी जानकारियाँ तथा फिल्मों की समीक्षाएँ रोचक एवं मनोरंजक तरीके से लोगों तक पहुँचा रहे है। फिल्म पत्रकारिता के नवीन दौर पर टिप्पणी करती हुई डॉ. आशा सिन्हा लिखती हैं, ष्सत्तर के दशक के बाद जब यथार्थ सिनेमा का दौर आया, तब फिल्म पत्रकारिता में नया इतिहास रचा गया, जो एक तरह से बीस साल की फिल्म पत्रकारिता का दौर रहा है। जिसमें फिल्मों को

यथार्थ जीवन तथा उसके उत्कृष्ट कला पक्ष से जोड़कर देखने का दौर आया। सामाजिक, राजनीतिक चिंताओं तथा उन पर टिप्पणियों से सिनेमा भरा हुआ है। इस ओर इंगित करने तथा भारतीय फिल्मों को दुनिया के परिप्रेक्ष्य में रखकर देखने का एक आलोचक विश्लेषणात्मक दौर फिल्म पत्रकारिता में शुरू हुआ, जो एक नया अध्याय है, पत्रकारिता के इतिहास में स्पष्ट है कि फिल्में आज एक आधुनिक कला माध्यम के में प्रमुख है।

इसका मूल उद्देश्य आरंभ से ही मनोरंजन रहा है। फिल्मों से हमारा समाज आज पूरी तरह प्रभावित है। यह एक पूर्ण कार्य है, जिसके लिए गहन अध्ययन, कलात्मक दृष्टि और अभ्यासको आवश्यकता है। यद्यपि आज फिल्म कला का क्षेत्र भी व्यवक को अपने भीतर पूरी तरह समाहित कर चुका है, लेकिन फिर भी इस क्षेत्र से जुड़े लोगों के लिए इसमें अभी भी अनेक संभावनाएँ विराजमान है।

रेडियो पत्रकारिता –

रेडियो एक ऐसा सशक्त एवं विशिष्ट संचार माध्यम है जो तुरंत संप्रेषण और विस्तृत प्रसारण की सुविधा के कारण आज पत्र–पत्रिकाओं से भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भारत में रेडियो जनसंचार का सर्वाधिक प्रमुख माध्यम इस दृष्टि से भी है, क्योंकि यह लोगों को शिक्षित तथा सूचित करने में ही नहीं, अपितु उन्हें स्वस्थ मनोरंजन उपलब्ध करवाने में सबसे आगे है। रेडियो पत्रकारिता, मुद्रण पत्रकारिता और टेलीविजन पत्रकारिता से बिलकुल भिन्न है। यह संचार माध्यमों से अलग इसलिए भी है क्योंकि यह अत्यंत सस्ता साधन है तथा आम आदमी से इसका सीधा संबंध है। इसलिए आज जितना महत्त्व समाचार पत्र–पत्रिकाओं का है उतना हो महत्त्व रेडियो का भी है। इस दृष्टि से पाश्चात्य विचारक लेनिन का कथन हैष रेडियो बिना कागज और बिना दूरी का समाचार पत्र है। वैसे रेडियो एक ऐसा माध्यम है जो ध्वनि तरंगों के द्वारा दूर स्थित गांवों में घने पर्वतों, जंगलों, पहाड़ों और रेगिस्तानी क्षेत्रों को लांघता हुआ भी अपनी ध्वनि पहुँचाने में समर्थ है। यह एक अव्य साधन है, जो सब के द्वारा सहज आनंदपूर्वक सुना जा सकता है। यह सही है कि रेडियो, टेलीविजन और आधुनिक इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों का इतिहास संसार में तार टेलीविजन और बेतार के अविष्कार से जुड़ा हुआ है। डॉ. निशांत इस पर प्रकाश डालते हुए लिख हैं, ष्सैमुअल मार्स द्वारा टेलीग्राफ (1844), अलेक्जेंडर ग्राहम बेल द्वारा टेलीफोन (1876) और श्एडीसनश

द्वारा बल्व की खोज के बाद दुनिया ने श्विद्युत युगश में प्रवेश किया। विद्युत युग ने संचार को भी अपने प्रवाह के सामान तीव्र गति देने का काम किया । सन् 1890 में गुगलेल्मों मारकोनी ने एक ऐसी विधि का अविष्कार किया जिससे ध्वनि बगैर तार के एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजी जा सकती थी। शीघ्र ही मारकोनी का बेतार का तार (वायरलेस), समुद्र में जहाज और नौकाओं में संदेश भेजने में प्रयुक्त होने लगा। इसके बाद मारकोनी वायरलेस प्रणाली में निरंतर नए नए अविष्कार जुड़ते गए। सन 1906 में ली डे फॉरेस्टश द्वारा रेडियो के लिए उपयोगी वायु–रहित–नली ट्यूब) बनाई गई, जिससे आवाज का प्रसारण संभव हो पाया। धीरे–धीरे रेडियो संचार विकसित होता गया।

स्पष्ट है कि रेडियो ध्वनि पर आधारित माध्यम है। हम जानते हैं कि सृष्टि के आरंभ में भी ध्वनियों का महत्त्व था। वेदों में भी यह स्वीकार किया गया है कि ध्वनि से ही संसार की रचना हुई और ध्वनि से ही वाणी की व्युत्पति भी मानी गई है। जब जनसंचार के आधुनिक उपकरणों का विकास नहीं हुआ था, तब मनुष्य अनेक प्रकार की ध्वनियों द्वारा आपस में संचार किया करता था। धीरे–धीरे संचार क्षमताओं में निरंतर प्रगति होती गई, जिसके परिणामस्वरूप मुद्रित कागज पर संदेश भेजा जाने लगा, लेकिन इसके लिए पढ़ा लिखा होना आवश्यक था। इसी समस्या से निपटने के लिए रेडियो का अविष्कार किया गया और आज रेडियो आधुनिक युग का सर्वाधिक शीघ्र संप्रेषित होने वाला जन–माध्यम बन गया है। रेडियों के लिए आज श्ऑल इंडिया रेडियोश और श्आकाशवाणीश शब्द व्यवहार में लाए जाते हैं, ष्आकाशवाणी शब्द भारतवर्ष के केंद्रीय सरकार द्वारा संचालित बेतार से कार्यक्रम प्रसारित करने वाली राष्ट्रीय देशव्यापक, अखिल भारतीय संस्था के लिए व्यवहार में लाया जाता है। 8 जून 1936 में इस संस्था की स्थापना के अवसर पर इसका अंग्रेजी नामकरण श्ऑल इंडिया रेडियोश हुआ। किंतु इससे पूर्व ही सन् 1935 में तत्कालीन देशी रियासत मैसूर में एक अलग रेडियो स्टेशन की स्थापना की गई, जिसे मैसूर सरकार ने आकाशवाणीश की संज्ञा दी। भारत वर्ष के स्वतंत्र हो जाने के कुछ समय बाद जब देशी रियासतों के रेडियो स्टेशनश ऑल इंडिया रेडियोश में सम्मिलित कर लिए गए तो श्ऑल इंडिया रेडियोश के लिए भारतीय नाम श आकाशवाणीश मैसूर रेडियो के नामानुसार अपना लिया गया। इस समय अंग्रेजी में ऑल इंडिया रेडियोश और भारतीय भाषाओं में श्आकाशवाणीश शब्द का व्यवहार होता है।

रेडियो स्वयं में एक स्वतंत्र विधा है। रेडियो द्वारा समाचार, साहित्य, विज्ञान, संस्कृति आदि विषयों से संबंधित सामग्री का प्रचार–प्रसार किया जाता है। इस पत्रकारिता में समाचार वाचन, समाचार दर्शन, सामूहिक समीक्षा आदि का भी समावेश होता है। रेडियो के लिए फीचर लिखना, कहानी, कविता, नाटक आदि लिखना भी एक तरह से रेडियो पत्रकारिता के अंर्तगत लिए जा सकते हैं। दूरदर्शन के बढ़ते प्रभाव मे आज रेडियों के समक्ष भुनौती खड़ी कर दी है। रेडियो पत्रकारिता का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष श्समयश और श्संक्षिप्तताश है। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र में रेडियो पत्रकारिता का कार्य, मात्र घोषणाओं तथा वक्तव्य तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसका कार्य सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक क्षेत्र में हो रहे विकास की अर्थवत्ता को स्वर देना है। आकाशवाणी अर्थात् रेडियो ग्रामीण, अशिक्षित व अनपढ़ों के लिए प्रभावपूर्ण माध्यम है क्योंकि इसे सुनने और समझने के लिए शिक्षित होने की आवश्यकता नहीं है। यही नहीं, भारत में ही नहीं बल्कि इससे बाहरी देशों में भी रेडियो को ग्रामीण लोगों तक पहुँचने का साधन माना गया है। ष्चीन, आस्ट्रेलिया, कनाडा, इटली जैसे अनेक देशों में ग्रामीण जनता तक पहुंचने में रेडियो का पूरा फायदा उठाया गया है। देश के विशाल आकार, सड़कों की कमी, शिक्षा की कमी को देखते हुए निरूसंदेह हमारे देश में ग्रामीण जनता तक रेडियो माध्यम के द्वारा ही पहुँचा जा सकता है। मीडिया को ग्रामीण लोगों के करीब लाने की दिशा में स्थानीय श्रेडियो स्टेशनश बड़ा सार्थक प्रयास है।

रेडियो की पहुँच आज ग्रामीण लोगों तक ही नहीं बल्कि दुनिया के हर कोने में रहने वाले लोगों तक है । आज श्आकाशवाणीश के स्थानीय रेडियो स्टेशनों की भरमार है। इस श्रृंखला में एफएम स्टेशनों की एक बाढ़ आ गई है । इनमें से कुछ प्रमुख हैं, 98.3 एफ. एम रेडियो मिर्चीश, 93.5 श्रेड एफ. एमश., 91 एफ. एम. श्रेडियो सिटीश, 104 एफ. एम., श्रेडियो तरंगश, शबिग एफ. एम.श, श्रेडियो मंत्राश आदि जिन्होंने रेडियो की पूरी दुनिया ही बदल कर रख दी है। ये एफ. एम चौनल आज दिन के चौबीस घंटे मनोरंजन करने के साथ–साथ ताजा नई जानकारियाँ उपलब्ध करवाते हैं। रेडियो के ये एफ. एम. चौनल जनता में अत्यंत लोकप्रिय हो रहे हैं। यहीं रेडियो पत्रकारिता की सबसे बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है। साथ ही आज रेडियो से लाखों रुपये का कारोबार भी उन पर प्रसारित होने वाले विज्ञापनों से हो रहा है।

इस प्रकार संक्षेप में कह सकते हैं कि रेडियो पत्रकारिता का क्षेत्र आज काफी लोकप्रियता और प्रसिद्धी से परिपूर्ण है। साथ ही देश की एकता, अखंडता, सांप्रदायिक सद्‌भाव कायम रखने में तथा जनता को देश–प्रेम का पाठ–पठाने में रेडिये पत्रकारिता का योगदान अद्वितीय और प्रशंसनीय रहा है, लेकिन फिर भी आज ये प्रयास किए जाने आवश्यक हैं कि रेडियो पर प्रसारित किया जाने वाला हर कार्यक्रम लोगों के हितों के प्रति प्रतिबद्ध हो, जिससे राष्ट्र हित में इसकी उपयोगिता में और भी वृद्धि हो सके तथा विश्वसनीयता बढ़ सके।

प्रश्न : पत्रकारिता का उद्‌भव और विकास बताएं।

उतर : 'पत्र' शब्द से व्युत्पन्न – 'पत्र' शब्द वैसे भी संस्कृत भाषा का ही शब्द है जिसकी उत्पत्ति पत्–ष्ट्रन से मानी जाती है यानि पत् धातु पर ष्ट्रन प्रत्यय लगने से पत्र शब्द बना, जिसका अर्थ है वृक्ष का पत्ता डॉ. धीरेन्द्रनाथ सिंह का मानना है, ष्पत्र शब्द में कृ धातु (करना) णिनि तल टाप प्रत्ययों के योग से पत्रकारिता शब्द बनता है। ष संस्कृत साहित्य में श्पत्रश शब्द का प्रयोग विभिन्न अर्थों में किया गया है। जिसमें से मुख्य गिरना, पड़ना, आना, उतरना, वायु में उड़ना, नीचे फेंकना आदि हैं, परंतु इन सब में श्पत्रश शब्द का अर्थ विशेषतरू गिरने के अर्थ से जोड़ा जाता है क्योंकि वृक्ष से पत्ता भी सदैव नीचे की और ही गिरता है। संस्कृ त हिंदी कोशश में श्वामन शिवराम आप्टेश पत्र की व्युत्पत्ति के आधार पर यह अर्थ ग्रहण करते हैं, ष्जो गिरता होगा, जो गिरता है, नीचे आता है अर्थात् वह वृक्ष का पत्ता । ष प्राचीन समय में कागज के निर्माण से पहले वृक्षों के पत्तों पर मनुष्य अपने विचार, भाव, संदेश लिखकर अपने स्वजनों तक पहुँचाते थे। उस समय वृक्षों के पत्ते यानि भोजपत्रही संदेश भेजने का मुख्य साधन था। इसके अतिरिक्त संस्कृत के विद्वानों ने अपने साहित्य में श्पत्रश शब्द के अनेक पर्यायों का प्रयोग किया है। पक्षियों के पंखों को भी श्पत्रश कहा गया, क्योंकि वे भी एक निश्चित समय पर गिरते हैं और कहीं पर श्वाहनश के लिए भी पत्र शब्द प्रयुक्त हुआ है, ष्स हि शुचिः शत पत्र स शुन्ध्युर्हिण्यवा सीरिधिरः स्वर्पाः।

बृहस्पति स स्वादेश ऋस्वः पुरु सखिभ्य आसुति करिष्ठः ।। अर्थात् बृहस्पति के अनेक वाहन है। ये शोधक और रमणीक बाधों से सजे है, वे गमनशील और दर्शनीय है। स्तोता को वे चाहन प्रचुर अन्न प्राप्त कराते हैं। म इस श्लोक में श्पत्रश शब्द का अर्थ बृहस्पति के वाहन

के रूप में लिया गया है। इस प्रकार स्पष्ट है कि सभी विद्वानों ने श्पत्रश शब्द का अर्थ भिन्न–भिन्न रूप में लिया है। आज के समय में श्पत्रश एक स्थान से दूसरे स्थान तक भाव–विचार (संदेश) पहुँचाने का माध्यम बन गया है। इसलिए श्पत्रश शब्द का प्रयोग चिट्ठी–पत्री के लिए होता है। पत्रकारिता के संदर्भ में श्पत्रश से अभिप्राय समाचार पत्र या विचार–पत्र होता है। पत्रकारिता संदर्भ कोश में पत्र शब्द के ये अर्थ बताए गए हैं, ष समाचार पत्र, संपादक के नाम पाठकों द्वारा लिखित पत्र, पन्ना, लिखित कागज पत्र का स्वरूप आज व्यक्तिगत अर्द्धसरकारी, सरकारी आदि विविध रूपों में संभव है। इसके विपरीत जब किसी प्रदेश, देश या विदेश के विभिन्न प्रकार के समाचारों को संकलित और मुद्रित कर सर्वजन सुलभ करवाए जाते हैं, तब उसे श्समाचार पत्रश कहा जाता है। समाचार पत्र में समाचारों, लेखों और अग्रलेखन आदि का प्रकाशन किया जाता है। इसी प्रकार पत्रिकाओं का मासिक, द्विमासिक, त्रैमासिक, वार्षिक या अनियतकालीन प्रकाशन किया जाता है। इस समस्त कार्य को पत्रकारिता की संज्ञा दी जाती है।

प्रश्न : पत्रकारिता की प्रमुख परिभाषाओं का वर्णन करें।

- **उतर : महात्मा गाँधी के अनुसार**– षपत्रकारिता का एक उद्देश्य जनता की इच्छाओं विचारों को समझना और उन्हें व्यक्त करना है, दूसरा उदेश्य सार्वजनिक दोषों की निर्भयतापूर्वक प्रकट करना है।

- **के. पी. नारायणन् के मतानुसार**– षपत्रकारिता लोकप्रिय अभिव्यक्ति की एक कला है। पत्रकारिता सभी मामलों में चर्चा के लिए जनता के सामने लोक–कल्याण कार्यों की सूची पेश करती है।ष इस कथन से स्पष्ट है कि पत्रकारिता का सम्बन्ध जीवन के किसी एक पक्ष या समाज के किसी एक वर्ग से नहीं होता है, बल्कि समस्त मानव समुदाय उसकी व्यवहार सीना में आता है। विवरण, तथ्य अवगत कराने के साथ समीक्षात्मक टिप्पणी के साथ पत्रकारिता भविष्य की दिशा भी निर्देश करती है।

- **श्री रामकृष्ण रघुनाथ खाडिलकर** ने पत्रकता और पत्रकार कलाश इन दोनों शब्दों का प्रयोग किया है। उनके अनुसार– ष्ज्ञान और विचार शब्दों तथा चित्रों के रूप में दूसरे तक पहुंचाना ही पत्रकाला है।

- **पेम्बा तथा न्यूवेन्स शब्दकोश** में पत्रकारिता को पारिभाषित करते हुए लिखा गया है– प्रकाशन, संपादन, लेखन एवं प्रसारण युक्त समाचार माध्यम का व्यवसाय पत्रकारिता है। पत्रकारिता अभिव्यक्ति की एक मनोरम कता है जिसका कार्य जनता व जन नेताओं के समझ लोकहित संबंधी कार्यों की सूची प्रस्तुत करता है।

- **सी.जी. मूजर के अनुसार**–समुचित ज्ञान का व्यवसाय ही पत्रकारिता है इसमें तथ्यों की प्राप्ति, उनका मूल्यांकन और समुचित प्रस्तुतीकरण होता है।

Annxure-V (2)

ORIGINALITY REPORT

5%	4%	0%	0%
SIMILARITY INDEX	INTERNET SOURCES	PUBLICATIONS	STUDENT PAPERS

PRIMARY SOURCES

1	www.uok.ac.in Internet Source	1%
2	journal.ijarms.org Internet Source	1%
3	ntaugcnet.co.in Internet Source	1%
4	pubhtml5.com Internet Source	<1%
5	hindisahityaniketan.com Internet Source	<1%
6	www.uou.ac.in Internet Source	<1%
7	rccmindore.com Internet Source	<1%
8	pezzottaitejournals.net Internet Source	<1%
9	dr.ntu.edu.sg Internet Source	<1%

10	www.niepa.ac.in Internet Source	<1 %
11	www.nou.ac.in Internet Source	<1 %
12	epustakalay.com Internet Source	<1 %
13	Submitted to Institute of Technology, Nirma University Student Paper	<1 %
14	Submitted to Sophia University Student Paper	<1 %
15	www.drsohanrajtater.com Internet Source	<1 %
16	www.yojana.gov.in Internet Source	<1 %
17	Singh, Jagdeep. "Sufi Sangeet ke Prachaar Prasaar mein Punjab ke Kalakaron ka Yogdan", Maharaja Sayajirao University of Baroda (India) Publication	<1 %
18	openlibrary.telkomuniversity.ac.id Internet Source	<1 %
19	Submitted to Pacific University Student Paper	<1 %
	fliphtml5.com	

20	Internet Source	<1 %
21	uou.ac.in Internet Source	<1 %
22	www.vishwaayurveda.org Internet Source	<1 %
23	Chander, Akashman Subhash. "Vartaman Paripeksh me Natyashastra me Varnit Taalshastra Ki Upayogita Avam Sambhavana", Maharaja Sayajirao University of Baroda (India) Publication	<1 %
24	www.allsubjectjournal.com Internet Source	<1 %
25	www.oswaalbooks.com Internet Source	<1 %
26	library.bjp.org Internet Source	<1 %
27	nrccamel.res.in Internet Source	<1 %
28	old.rrjournals.com Internet Source	<1 %
29	www.herenow4u.net Internet Source	<1 %
	www.hindijournal.in	

30	Internet Source	<1%
31	www.hindisahityaniketan.com Internet Source	<1%
32	www.nbfgr.res.in Internet Source	<1%
33	Chhaya Jain. "OVERALL VIEW ON HINDI CINEMA", International Journal of Research - GRANTHAALAYAH, 2019 Publication	<1%
34	Tiwari, Priyambada. "Vartaman Bharatanatyam Nritya Shaili me Natyashastra ke Karana: Vishleshanatmak Adhyayana", Maharaja Sayajirao University of Baroda (India), 2023 Publication	<1%

Exclude quotes	Off	Exclude matches	Off
Exclude bibliography	Off		